भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 5 | **मई-जून** 2004 | **अंक** 5-6

जनभाषा बनाम लोकतन्त्र

आज देश के पचास हजार से ऊपर की आबादी वाले लगभग हर शहर में, हिन्दी माध्यम वाले सरकारी स्कूलों के समांतर खड़े किए गए इंग्लिश मीडियम पब्लिक स्कूल हैं। इन स्कूलों की मार्फत पढ़े-लिखों की ऐसी पीढ़ी तैयार हो रही है, जो हिन्दी साहित्य तो छोड़िए, हिन्दी की गिनती या पूरी वर्णमाला भी ठीक से नहीं जानती।

शिक्षा के क्षेत्र में क्या ऐसा वातावरण नहीं बनाया जाना चाहिए जिसमें हर संस्था अपने छात्रों को उनकी मातृभाषा की तालीम उतने ही जतन और आदर से दे जैसे वह अंग्रेजी पढ़ाती है ? और जिसमें कोई भी युवा सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार करते वक्त, कि उसे हिन्दी (या उसकी अपनी मातृभाषा) में बोलने, लिखने या गिनने में मुश्किल होती है, खुद शर्म से डूब मरने की इच्छा महसूस करे ?

किसी भी देश की युवा पीढ़ी सिर्फ भाषा के लिए भाषा नहीं सीखती। माध्यम बनकर जो भाषा उनके लिए सामाजिक सम्मान और आर्थिक बेहतरी के द्वार खोलती है, उसे ही वे सीखेंगे। और उन द्वारों से गुजर कर जिस दुनिया में वे प्रवेश करेंगे, उसके ही आदर्श प्रतीक उनके भी आदर्श प्रतीक बनेंगे।

एक बड़े जनाधार वाला दल बनने के लिए पार्टी के भीतर जनता की भाषा और शिक्षा को लेकर ऐसी विनयशील संवेदना होना जरूरी है जो धर्म और जाति के परे पूरी राजनीति को भाषा, संप्रेक्षण और उनसे जुड़े मूल्यों के प्रति जागरूक और अन्वेषी बनाए। हिन्दी के स्वघोषित पक्षधर और साहित्यमर्मज्ञ भाजपाई ही नहीं, बड़े दलों के सभी नेता भी, यदि हिन्दी को अपने दुराग्रह छुपाने का परदा या कि सत्तामूलक राजनीति के हथकण्डों के बतौर इस्तेमाल करने की बजाए, जनभाषा में निहित संवेदनाओं और जीवंत मूल्यों को अपने राजकाज के केन्द्र में स्थापित करने का प्रयास करें, तो वे भाषाओं का ही नहीं लोकतंत्र का भी उद्धार कर रहे होंगे।

— मृणाल पांडे

सम्पादक, हिन्दुस्तान

जीवन नित्य अतीत है, अक्षर कालातीत।
सदा अध्ययन में करो, साधो, समय व्यतीत॥
भेंट न अक्षर से हुई, पढ़ा न कोई ग्रंथ।
गुरु-शिष अंधे अकल के, दोनों कूप परंत॥

— सूर्यकुमार पांडेय

भाषायी वैश्वीकरण

ब्रिटेन से आयी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत में आकर व्यापार शुरू किया और धीरे-धीरे यहाँ की शासक बन गयी। शासक बनते ही अपनी सत्ता मजबूत करने के लिए अँग्रेजी भाषा की दीक्षा प्रारम्भ कर दी। परिणाम हुआ कि भारत की भाषा, सभ्यता तथा संस्कृति आंग्ल-भारतीय होती गई। स्वतंत्रता के पश्चात सिद्धान्त रूप से हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार की गई, किन्तु अँग्रेजी भाषा के पक्षधर तथा दक्षिण में हिन्दी के विरोध के फलस्वरूप हिन्दी सैद्धान्तिक रूप से भले ही राष्ट्रभाषा बनी हुई है किन्तु देश के विभिन्न भाषाओं को जोड़ने में असफल सिद्ध हो रही है।

अंग्रेज अच्छे व्यवसायी हैं, भूमण्डलीकरण के इस युग में चीन, जापान, रूस सभी देश व्यापारिक अनिवार्यता के कारण अँग्रेजी स्वीकार कर रहे हैं। लगता है अँग्रेजी विश्व भाषा बन गई है। विगत 500 वर्षों से अधिक से ब्रिटेन का प्रमुख प्रकाशक आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस अँग्रेजी के शब्दकोश प्रकाशित करता आ रहा है। उसका स्थायी रूप से शब्दकोश सम्पादन विभाग है जो विभिन्न देशों के लिए प्रतिवर्ष संशोधित कर प्रकाशित किये जाने वाले संस्करणों में उन देशों के शब्दों को उदारतापूर्वक अपने कोश में सम्मिलित करता रहता है। विश्व के सभी देशों में उसके कोश लोकप्रिय हैं। कोश के नये भारतीय संस्करण में अच्छा, आलू, अरे, चड्ढी, देसी, फिल्मी, गोरा, जंगली, यार, बदमाश, भाषा, नाम, नाटक, चावल, रोको, चक्का, श्रीमती, सिंदूर, बापू, एकदम, इन्किलाब (उर्दू), लंगर, टप्पा (पंजाबी), भद्रलोक (बंगला) आदि शब्द सम्मिलित किए गये हैं। कहा जाता है कि आक्सफोर्ड कोश में अब तक दस प्रतिशत भारतीय भाषा के शब्द सम्मिलित किये जा चुके हैं।

आज देश में हर गाँव, शहर में अँग्रेजी को प्रधानता मिली हुई है। कान्वेन्ट स्कूल खुलते जा रहे हैं। शिक्षा उद्योग बन गया है। इस अँग्रेजी प्रधान शिक्षा से आज ब्रिटेन को प्रतिवर्ष अरबों रुपयों की आय हो रही है। इतना ही नहीं सभी प्रदेश अपनी भाषायी अस्मिता को भूलकर प्रारम्भिक स्तर से अँग्रेजी को मान्यता दे रहे हैं। यह मान लिया गया है कि देश के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक विकास के लिए अँग्रेजी के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है। विदेशी प्रकाशक बड़ी संख्या में स्कूल तथा उच्च शिक्षा की पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं।

ब्रिटेन प्रतिवर्ष लेखकों को बुकर पुरस्कार, कामनवेल्थ पुरस्कार देता है। कितने भारतीय लेखक जो अँग्रेजी में लिखते हैं उन्हें भी पुरस्कृत किया गया है। यह भी अँग्रेजी भाषा की व्यवसायिकता का माध्यम है। हमारे देश की साहित्य अकादमी भी इसमें पीछे नहीं है।

आज मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय अहिन्दीभाषी प्रदेशों में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान स्थापित कर उन प्रदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए काम कर रहा है; इस प्रयास में कि अहिन्दीभाषी प्रदेश हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें। किन्तु क्या भारतीय शब्द सम्पदा को हिन्दी शब्दकोशों में सम्मिलित करने की कोई योजना या प्रयास है ? 6-7 दशक पूर्व हिन्दी के जो कोश बने आज भी ज्यों के त्यों हैं। नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, ज्ञानमण्डल के शब्दकोशों का वर्षों से संशोधन नहीं हुआ। आज पंजाबी, मराठी, गुजराती तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लेखक हिन्दी में लिख रहे हैं, उनकी रचनाओं में अनेक भारतीय भाषाओं और लोकजीवन के शब्द आ गये हैं, इसी प्रकार आदिवासियों के जीवन पर लिखी गई रचनाओं में विभिन्न बोलियों के शब्द आ गये हैं, उस शब्द-सम्पदा को संग्रह कर क्या शब्दकोशों को समृद्ध नहीं करना चाहिए ?

देश में भावनात्मक विकास के साथ बौद्धिक चिन्तन की भी अपेक्षा है। तभी देश में राष्ट्रीय एकता होगी। देश की अनेक संस्थाओं ने इस दिशा में महत्वपूर्ण काम किया किन्तु आज अधिकांश संस्थाएँ पारिवारिक सम्पदा बनाकर उन्हें भोग रही हैं। काश, शासन इस ओर दृष्टि डालता! **— पुरुषोत्तमदास मोदी**

आपका पत्र

आपकी सम्पादकीय चिन्तन दृष्टि से मैं सहमत हूँ। भाषा विचार विनिमय का माध्यम-भर नहीं वरन संस्कारों और जातीय सांस्कृतिक बोध की वाहिका भी है। अंग्रेजी के गौरवगान में हिन्दी प्रदेशों की अगुआई अपनी दिग्भ्रमित, पराधीन और कुंठित मनस्थितियों का द्योतक है। राष्ट्रीय स्वाधीन का ज्वार उठाने में पहले भी हिन्दी की महती भूमिका रही है, आज भी है बशर्ते हम अपनी भाषाई ताकत और गरिमा को पहचानकर अपसांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करने को प्रस्तुत हों। **— डॉ० विनय मिश्र,** अलवर (राजस्थान)

पुस्तक जीवन में वह ऊर्जा है जिसके बिना मनुष्य निर्जीव हो जाता है। पुस्तक जीवन का वह आधार है जिस पर खड़े होकर जीवन की समस्त सच्चाईयों से अवगत हो पाते हैं। जीवन में खुशियाँ पुस्तक ही लाती हैं, रोशनी घर को ही नहीं, वरन संसार को प्रकाशित करती है। **— आभा पूर्वे,** भागलपुर

आज मुंशी प्रेमचंद, निराला, मुक्तिबोध सरीखे समर्पित रचनाकार नहीं के बराबर रह गए हैं और मीडिया, उच्च पदों, संस्थानों के अध्यक्ष, सरकारी प्रकाशन संस्थानों में कार्यरत अनेक ऐसे व्यक्ति नजरों के सामने हैं जो अपने पदों के प्रभाव से न केवल बड़े प्रकाशकों से पुस्तकें छपवाने में सफल हुए हैं वरन् सरकारी/गैर सरकारी पुरस्कार भी हड़प रहे हैं। सार्थक साहित्य सृजन पुस्तक हो या पत्रिका दोनों ही मामले में हाशिए पर जा चुका है ?

— डॉ० तारिक असलम 'तस्नीम'
सम्पादक, कथा सागर, पटना

भारतीय वाङ्मय के जनवरी 04 के अंक में आपका सम्पादकीय 'छप्पन वर्षों की हताशा' झकझोरने वाला है। वास्तव में हम हिन्दी के जैसे दीवाने हैं वैसे जानकार नहीं। राजनेता भी राग तो हिन्दी का अलापते हैं, उसके लिए कुछ ठोस करते नहीं हैं। हम कभी दक्षिण के नाम पर, कभी अंग्रेजी के नाम पर, कभी बाजारवाद के नाम पर अपने को धोखा देते हैं। हिन्दीभाषी राज्य ही हिन्दी के व्यवहार के लिए कमर कस लें तो उन्हें कौन रोकता है ? हिन्दीभाषी राज्यों विश्वविद्यालयों में ही हिन्दी के अध्यापन और शोध की क्या स्थिति है ? हिन्दी की बस तो, लगती है, चली गयी।
— डॉ० कान्तिकुमार जैन

'पुस्तकालय संस्कृति' शीर्षक सम्पादकीय बौद्धिक जगत की ज्वलन्त समस्या को केन्द्रीयता प्रदान करता है। किसी देश की संस्कृति भव्य भवनों से नहीं, बल्कि पुस्तकों से निर्मित होती है। देश के हर बस्ती में, मुहल्ले-मुहल्ले में एक पुस्तकालय-वाचनालय होना चाहिये जहाँ लोग मानसिक शान्ति, समृद्धि, तृप्ति प्राप्त कर सकें। बिना पुस्तकालयों के देश, समाज, मुहल्ला, बस्ती अधूरी है, सूनी है।

— ओमप्रकाश वर्मा, जमशेदपुर

'भारतीय वाङ्मय' (अप्रैल 2004) में सम्पादकीय चिन्ता जायज है और जायज है विभिन्न उद्धरणों में व्यक्त विचार और साहित्य की क्षमता का रेखांकन भी। लुप्त होती पाठकीयता के सन्दर्भ में सर्वाधिक चिन्तनीय स्थिति हिन्दी पट्टी की है। हमारे यहाँ निजी पुस्तकालयों का चयन नहीं है। हर स्तर का अध्यापक पुस्तक-संस्कृति से कटता गया है और इसके लिए सरकार दोषी है जिसने लोकाभिमत के चक्कर में गुणवत्ता को दरकिनार कर अयोग्यों या ज्ञान-विरोधी शिक्षकों को केन्द्रीयता प्रदान की है।

पश्चिम की मीडिया पुस्तकों को बाजार सुलभ कराती है और लेखक को ख्याति।

— डॉ० पी०एन० सिंह, गाजीपुर

आपने बहुत प्रासंगिक प्रश्न उठाया है—'पाठक कहाँ गया ?' बेचारा पाठक जाएगा कहाँ ? प्रकाशन-स्थिति, भ्रष्टाचारग्रस्त शासनतंत्र और जनतंत्र के कल्याण की दुहाई देनेवाली सरकार (जिसकी दृष्टि में सबसे अच्छा तंत्र वही है जिसमें जन साक्षर और शिक्षित नहीं हो) ने उसे ऐसा मारा है कि वह यहीं छटपटा रहा है। वह पुस्तकालय जाता है, तो वहाँ उसे अपनी रुचि की नहीं, उनकी रुचि की पुस्तकें मिलती हैं। पाठक के हित में कहीं कोई इस महान देश में सोचता हो, तो इसकी जानकारी अपने पत्र के माध्यम से दीजिए।
— सिद्धनाथकुमार, राँची

भाषा समाज की नींव है और सभ्यता का सबसे बड़ा चमत्कार। हिन्दी भाषा और अन्य भारतीय भाषाओं पर छाए अंग्रेजी भाषा के संकट को लगभग एक शताब्दी से अधिक पहले भारतेन्दुजी ने महसूस कर लिया था, और तभी लिखा था कि ''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल''। वस्तुत: आज के उपभोक्तावादी एवं बाजारकेन्द्रित समय में भाषा एक गौण चीज बन कर रह गई है। **— श्यामपलट पाण्डेय**
आयकर आयुक्त, मुम्बई

पाठक कहाँ गया ? शीर्षक से लिखा सम्पादकीय सम्पूर्ण लेखकों-साहित्यकारों को इस विषय पर गहन चिन्तन करने के लिए आमंत्रित करता है। प्रो० राजेन्द्र मिश्र का पत्र पढ़कर बहुत अच्छा लगा। हिन्दी के विरोध में वरुण वेंकटेश्वर तथा सुव्वैया वेंकटरमण की टिप्पणी सचमुच आपत्तिजनक है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर आसीन देखने में इन्हें ईर्ष्या क्यों होती है ? प्रो० मिश्र ने 'खिचड़ी' शब्द का अर्थ जिस शालीनता से समझाया है उससे शिक्षा लेनी चाहिए।

— डॉ० हरेराम पाठक
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डिगबोई महिला महाविद्यालय, तिनसुकिया

विश्व पुस्तक मेला समाप्त हुआ। इस निमित्त से आपने पुस्तकालय-संस्कृति की चर्चा छेड़ी जो समीचीन तो है पर कुछ कड़वी भी है यद्यपि आपने इसकी चर्चा नहीं की है—पुस्तकालय किसी भी बस्ती का मस्तिष्क होते हैं, ऐसी मेरी मान्यता है। पुस्तकालयों और पुस्तकों से पाठक जैसे गायब हुए हैं, वह चिन्ता की बात तो है परन्तु उसके धारणों पर निष्पक्षता से विचार करना होगा।

— डॉ० प्रदीपकुमार जैन, मुजफ्फरपुर

आपके सम्पादकीय से लेकर 'महत्त्वपूर्ण कथन', 'आपका पत्र', 'समाचार', 'पुरस्कार-सम्मान', 'पुस्तक समीक्षा' तथा 'पुस्तक तथा पत्र-पत्रिका परिचय' आदि सारे-के-सारे स्तम्भ वाचालता का अभाव तथा सारग्राही स्वभाव की द्युति लिये हुए है।

'पाठक कहाँ गया' सम्पादकीय में आपने हमारे समय का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण सकल उठाया है और सही जवाब की संकेत थी। **— हरीशकुमार शर्मा**
पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश

सम्मान-पुरस्कार

साहित्य शिरोमणि सम्मान

हिन्दी एवं उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी द्वारा शनिवार, 10 अप्रैल 2004 को रवीन्द्रालय, लखनऊ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र व आले अहमद सुरूर की स्मृति में आयोजित 15वें अन्तरराष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन में हिन्दी और उर्दू के साहित्यकारों को 'साहित्य शिरोमणि' सम्मान से नवाजा गया। इस अवसर पर राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री ने कहा कि हिन्दी और उर्दू लोगों को करीब लाती है। राज्यपाल ने हिन्दी के लिए डॉ० अहिल्या मिश्रा (हैदराबाद), डॉ० राजेन्द्रप्रसाद पाण्डेय (वाराणसी), प्रदीप जैन अंकुश (नोएडा) और उर्दू के लिए प्रो० शारिब रूदौलवी (लखनऊ), प्रो० अफगान उल्ला (गोरखपुर) और गीतकार इब्राहिम अश्क (मुम्बई) को साहित्य शिरोमणि सम्मान से नवाजा। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की डॉ० पुष्पलता तनेजा को भारतेन्दु भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हिन्दी और उर्दू के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण काम करने के लिए डॉ० ज्योतिनारायण (हैदराबाद), रवीन्द्र सक्सेना (सूरत) को हिन्दी साहित्य सम्मान से सम्मानित किया।

पियरे को मिला बुकर

मामूली चर्चित ऑस्ट्रेलियाई-मेक्सिको लेखक डी०बी०सी० पियरे ने अपनी एकमात्र एशियाई प्रतिद्वंद्वी बांग्लादेश की मोनिका अली को पछाड़ते हुए साहित्य के क्षेत्र में ब्रिटेन के सर्वाधिक प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार पर अधिकार कर लिया। पियरे को उनकी पहली कृति 'वरनॉन गॉड लिटिल' के लिए पचास हजार पौंड का यह पुरस्कार दिया गया है।

ब्रिटिश पासपोर्ट पर आयरलैंड में रहने वाले 42 वर्षीय पियरे द्वारा लिखी 'वरनॉन गॉड लिटिल' में अमेरिका की संस्कृति पर करारा व्यंग्य है। इसकी कहानी अमेरिका में हाल ही में हाईस्कूल में हत्याकाण्डों की बढ़ती घटनाओं से प्रेरित है।

देवीशंकर अवस्थी सम्मान

हिन्दी आलोचना के लिए आठवाँ देवीशंकर अवस्थी सम्मान युवा आलोचक श्री पंकज चतुर्वेदी को वर्ष 2003 में प्रकाशित उनकी पुस्तक 'आत्मकथा की संस्कृति' पर दिया जायगा। यह पुरस्कार हिन्दी के प्रख्यात आलोचक देवीशंकर अवस्थी की स्मृति में उनकी पत्नी श्रीमती कमलेश अवस्थी द्वारा सन् 1995 में स्थापित किया गया है।

कथन

पुस्तकों की दुनिया अगाध और अनन्त है। पुस्तक के अक्षर-अक्षर में भिन्न-भिन्न देवता वास करते हैं। ज्ञान प्राप्ति के जितनी भी साधन स्रोत हैं, उनमें पुस्तकों का स्थान सर्वप्रमुख है।

सुप्रसिद्ध विचारक एमर्सन का मत है कि ''सदग्रन्थ मनुष्य का वह आदर्श मित्र और सच्चा साथी है, जो सदैव सन्मार्ग पर चलने की नेक सलाह देता है। प्रेम ही परमात्मा के राज्य में पहुँचाने वाला दिव्य विमान है। जिस घर में अच्छी पुस्तकें नहीं हैं, वह घर वास्तव में घर कहलाने योग्य नहीं है। वह तो जीवित मुर्दों का कब्रिस्तान है।'' कार्लाइल के अनुसार ''पुस्तकें घर की रोशनी, समाज की ज्योति और कुल की आभा है।'' पुस्तकें हमारे दिल और दिमाग को रोशन करती हैं। हमारे विचारों को सुसंस्कृत बनाती हैं।

— रामशोभितप्रसाद सिंह
सिन्हा पुस्तकालय, पटना

पुस्तकों की सारस्वत साधना शब्द-बिम्बों में मस्तिष्क में जीवित रहती हैं। मस्तिष्क पढ़ता है, आँखें देखती हैं। दृष्टि-पथ से मस्तिष्क तक की शाश्वत यात्रा बालपन से बुढ़ापे तक रहती है। यदि पुस्तक-अभिनय की अभिनव यात्रा प्रारम्भ की जाए तो रुचि को अभिरुच्यात्मक अभिवृद्धि प्राप्त होती है।

— डॉ० सर्वदानंद द्विवेदी
उपनिदेशक (राजभाषा), उन्नाव

पुस्तकें अपने पाठकों का इन्तजार करती हैं। इसीलिए पुस्तकों में पाठकों की अभिरुचि जगाने की जरूरत है। **— प्रो० शमशाद हुसैन**
कुलपति, मगध विश्वविद्यालय

पुस्तकालय विद्यालय की आत्मा है। पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है, जिस पर विद्यालय की हर गतिविधि निर्भर रहती है। पुस्तकालयाध्यक्ष सरस्वती माँ का साकार रूप होता है। उसमें शान्त, यथार्थवादी, प्रतिभाशाली, शिष्ट, हँसमुख इत्यादि गुणों का होना जरूरी है। इन गुणों से ही वह स्वयं सभी का प्रिय बन सकता है तथा साथ ही पुस्तकालय के उपयोग में अवर्णनीय वृद्धि करा सकता है।

पुस्तकालय शिक्षा की विशेषताओं को प्रतिबिम्बित करता है। शैक्षणिक संस्था का महत्त्व उसके पुस्तकालय द्वारा निर्धारित किया जाता है।

— रामेश्वरलाल
पुस्तकालयाध्यक्ष, राजकीय माध्यमिक विद्यालय
श्रीमाधोपुर (सीकर)

माँ के बाद पुस्तकें इस संसार की दूसरी सबसे बड़ी रचना है। पुस्तकें पढ़ने के बाद आदमी वही नहीं रह जाता, जो वह पहले था। **— प्रो० गोपीचन्द नारंग**
अध्यक्ष, साहित्य अकादमी

पुस्तक और पठन रुचि

हमारे चारों ओर जो दुनिया है उसे हम जितना स्वयं से अनुभव करते हैं उसकी अपेक्षा एक अच्छी पुस्तक हमें अधिक स्पष्टता और परिशुद्धता के साथ अनुभूति कराती है। यह एक मनुष्य को उसके 'स्व' की खोज करने में सहायता करती है, साथ ही उसे उसके समाज और समय के परिमण्डल से पुस्तक के परिवेश और चेतना की ओर ले जाती है। यह मनुष्य मात्र को एक अंतरंग सम्बन्ध के सूत्र में बाँधती है। एक लाक्षणिक भाषा के साथ एक अच्छा साहित्य उन चीजों के बारे में कहता है जो 'वर्तमान है और वर्तमान से पर' है। तो भी, एक साहित्यिक कृति की सुन्दरता आपेक्षिक है, यह एक मनुष्य, स्थान या समय के लिए अलग-अलग हो सकता है और उसी मनुष्य के लिए स्थान और समय के अनुसार बदल भी सकता है। इसके अलावा एक अच्छी पुस्तक, खासकर कल्पित, पाठकों और पुस्तक के बीच की दूरी को हमेशा कम करने का प्रयास करती है।

— डॉ० सीताकांत महापात्र

साहित्यकार और निजी जीवन

साहित्य में अन्तर्भूत साहित्यकार और साहित्य के बाहर सामाजिक प्राणी के रूप में साहित्यकार इन दो के बीच भेद करना आरम्भ में ही आवश्यक प्रतीत होता है। शेक्सपियर के सामाजिक-व्यावसायिक व्यक्तित्व को देखकर कौन इस बात का अनुमान कर सकता है कि उसकी नाट्य रचनाओं में समस्त विश्व तत्वत: प्रतिबिम्बित है। जयशंकर प्रसाद साहू थे और कामायनी के दृष्टा कवि। सफल नट अभिनय में भावाविष्ट नहीं होता और अपनी कला में तन्मय होता है, ऐसे ही साहित्यकार भी अपने निजी जीवन में कैसा है या किस मतवाद का समर्थन करता है इसका उसकी साहित्यिक रचना से कोई अपरिहार्य सम्बन्ध नहीं है।

— डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डे

उपेक्षित साहित्यकार

इस वर्ष हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार विष्णु प्रभाकर को 'पद्मभूषण' सम्मान दिए जाने की घोषणा हुई। उनकी इस समय आयु 92 वर्ष की है। वे जीवनभर मसिजीवी रहे हैं। उन्होंने कोई सरकारी गैर-सरकारी नौकरी नहीं की, कहीं से किसी प्रकार का अनुदान नहीं प्राप्त हुआ। इस आयु में भी वे नियमित लेखन करते हैं। रायल्टी से जो कुछ प्राप्त होता है वही उनकी आय है। पद्म पुरस्कार पाकर भी उनकी भौतिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। क्या किसी भी सरकार का यह दायित्व नहीं है कि वह ऐसे कलमकारों को पूरा सम्मान दे और यह भी सुनिश्चित करे कि अपने जीवन की संध्या बेला में वे न्यूनतम सुविधाओं के साथ, गौरवपूर्ण ढंग से जीवनयापन कर सकें? **— डॉ० महीप सिंह**

काशी की सांस्कृतिक साहित्यिक धरोहर

बनारस शहर को तो तुलसीमय होना चाहिए। भारतेन्दु, जयशंकरप्रसाद, प्रेमचंद आदि कई विभूतियों के कार्यस्थल के कारण संस्कृति और साहित्य के एक जीवंत केन्द्र के रूप में बनारस यात्रा को एक सांस्कृतिक-साहित्यिक यात्रा भी बना देनी चाहिए, समुचित स्मारकों, जीवंत संस्थानों और कार्यक्रमों, अनुसंधान तथा संस्थानों और कार्यक्रमों, अनुसंधान तथा सृर्जनात्मक कार्यकलापों को निरन्तर जारी तजवीजों के द्वारा। इन सबमें तुलसीदासजी, रामचरितमानस और तुलसी के जीवन से जुड़े प्रसंगों-स्थलों का ज्ञान आवश्यक है, ताकि जन-जन को और आगत पीढ़ी को उन सबसे वाकिफ कराया जा सके। आप बनारस जाएँ और आपको तुलसीदास से गहन साक्षात्कार कराती व्यवस्थाओं से वंचित रहना पड़े, यह हमारी संस्कृति, धरोहर और धार्मिकता के साथ उपेक्षा की कहानी ही होगी।

— कमलनयन काबरा

समाचारपत्रों, पत्रिकाओं में प्रकाशित होनेवाला साहित्य जनमानस को बनाता है। जनमानस परिस्थितियों का निर्णय करता है। इस तरह परिवर्तन की भूमिका तैयार होती है। साहित्यकार की दृष्टि, उसकी रचना और उसका प्रसार राजनीतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन को बदलने में अपनी भूमिका सदैव निभाते रहे हैं।

— प्रो० अक्षयकुमार जैन

छात्रा का भाषा प्रेम

जर्मन सेना ने कई फ्रांसीसी क्षेत्रों को अपने कब्जे में ले लिया था। जर्मनों ने सुनियोजित ढंग से फ्रेंच भाषा का उन्मूलन करने के लिए जर्मन भाषा को उस क्षेत्र के लोगों पर लादना शुरू किया।

तमाम दुकानदारों को अपने नामपट्ट जर्मन भाषा में लिखने के आदेश जारी कर दिए गए। स्कूल-कॉलेज में फ्रेंच की जगह जर्मन पढ़ाई जाने लगी। एक दिन जर्मनी की रानी कैसराइन एक स्कूल का निरीक्षण करने आई। वह एक बारह वर्षीय छात्रा द्वारा बनाई गई कलाकृति को देखकर बहुत प्रसन्न हुई।

रानी ने कहा, ''तुम बहुत प्रतिभावान हो। मैं आज तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। तुम जो चाहो माँगो, तुम्हारी हर इच्छा पूरी की जाएगी।''

फ्रांसीसी छात्रा ने जवाब दिया, ''रानी यदि आप वास्तव में मुझसे प्रसन्न हैं तथा मेरी हर इच्छा को पूरा करने को तैयार हैं, तो मैं कहती हूँ कि मेरी मातृभाषा फ्रेंच मुझे लौटा दो।''

रानी छात्रा के भाषा प्रेम को देखकर दंग रह गई। उसने जर्मन के साथ-साथ फ्रेंच भाषा पढ़ाए जाने की छूट दे दी।

— शिवकुमार गोयल

देश की जिन भाषाओं, जातियों, सम्प्रदायों ने संयुक्त रूप से राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया, देश को स्वतंत्र कराया। आज वे भाषाएँ राष्ट्रीयता से विहीन हो गई हैं और भाषा, जाति तथा सम्प्रदाय को राजनीति के शस्त्र के रूप में इस्तेमाल कर रही है। देश से राष्ट्रीय एकता का बोध समाप्त होता जा रहा है।

समाचार

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा द्वारा संचालित उच्च शिक्षा और शोध संस्थान (हैदराबाद केन्द्र) में 16 मार्च, 2004 को सम्पन्न सम्मान समारोह में कुलसचिव डॉ० पी०एच० सेतुमाधव राव और साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत अंग्रेजी समीक्षक प्रो० मीनाक्षी मुखर्जी के करकमलों द्वारा हैदराबाद के उदीयमान हिन्दी कवि **द्वारकाप्रसाद मायछ** को वर्ष 2004 के लिए 'कर्पूर वसंत सम्मान' से सम्मानित किया गया। उन्हें 'स्वतंत्र वार्ता' के सम्पादक डॉ० राधेश्याम शुक्ल और वरिष्ठ हिन्दीसेवी श्री काज वेंकटेश्वर राव ने शाल और पुष्पगुच्छ प्रदान किए।

सम्मानित कवि द्वारकाप्रसाद मायछ ने अपनी रचना 'मैं चारण हूँ इस माटी का इसके दु:ख की गाथा लिखूँगा' का सस्वर वाचन किया।

प्रो० नागप्पा को वरिष्ठ हिन्दी सेवा उपाधि 'कनार्टक हिन्दी रत्न'

कर्नाटक राज्य का गौरवान्वित पुत्र प्रो० नागप्पाजी अपनी 93 वर्ष की आयु में भी कन्नड़ एवं हिन्दी दोनों क्षेत्र पर अधिकारपूर्वक आगे बढ़ रहे विशिष्ट सेवी हैं। क्या अध्यापन क्षेत्र, क्या साहित्य क्षेत्र सभी में वे सिद्धहस्त हैं।

अखिल कर्नाटक हिन्दी साहित्य अकादमी, बेंगलूर की ओर से सम्मान समारोह एवं 'स्वप्नरथ' पुस्तक लोकार्पण समारोह चौडय्या मेमोरियल हॉल में आयोजित किया गया। कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री त्रिलोकीनाथजी चतुर्वेदी के अमृत कर-कमलों द्वारा विशिष्ट हिन्दीसेवी की उपाधि 'कर्नाटक हिन्दी रत्न' तथा डॉ० बि० रामसंजीवय्या पुरस्कार समिति का नकद पुरस्कार रु० 25,000/- प्रदान किया गया।

स्वप्नरथ के लेखक डॉ० द्वारकानाथ कबाडी, हिन्दी अनुवादिका श्रीमती संजीविनी सत्यपाल का आदर करते हुए किताब का लोकार्पण राज्यसभा सदस्य, अखिल कर्नाटक हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष सम्माननीय डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी द्वारा हुआ।

कमलकिशोर गोयनका अमेरिका-प्रवास के बाद स्वदेश लौटे

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० कमलकिशोर गोयनका तीन महीने के अमेरिका-प्रवास के बाद दिल्ली लौट आये हैं। अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय तथा न्यूयार्क विश्वविद्यालयों ने उन्हें प्रेमचंद पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। कोलम्बिया विश्वविद्यालय 250 वर्ष पुराना विश्वविद्यालय है तथा वहाँ हिन्दी तथा उर्दू की पढ़ाई होती है। डॉ० गोयनका का व्याख्यान सुनने के लिए सौ से अधिक व्यक्ति उपस्थित थे। डॉ० गोयनका का न्यूयार्क की हिन्दू सोसाइटी ने सम्मान किया और वाइस ऑफ अमेरिका एवं टेलीविजन ने उनसे प्रेमचंद पर इन्टरव्यू लिये। अमेरिका-प्रवास में डॉ० गोयनका ने हिन्दी के अनेक लेखकों से सम्पर्क किया और अमेरिका में भारतवंशी लेखकों के हिन्दी साहित्य के अध्ययन तथा उसकी भारत में प्रतिष्ठा की समस्याओं से लेकर उनसे विस्तृत चर्चा की। डॉ० गोयनका इधर अमेरिका के भारतवंशी हिन्दी लेखकों के साहित्य पर एक पुस्तक भी लिख रहे हैं।

अंग्रेज कोठी

नौकरशाहों व राजनैतिक माफियाओं का गठजोड़ समाज में जहर घोल रहा है। ऐसे दूषित वातावरण से बचने के लिए अब लेखकों को जिम्मेदारी सँभालनी होगी। वरिष्ठ साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल ने सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित चर्चित लेखक आर०के० पालीवाल द्वारा लिखित उपन्यास 'अंग्रेज कोठी' पर आयोजित परिचर्चा में अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि जिन सामाजिक समस्याओं को उपन्यास में जोरदार तरीके से उठाया गया है, वे समस्याएँ अंतहीन हैं, इसलिए हम सबको मिलकर इसके निराकरण के बारे में सोचना होगा।

भाषा विभाग, पंजाब

पंजाबी साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए पंजाब सरकार सुप्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें भाषा विभाग की ओर से छपवाकर घर-घर में पहुँचाएगी। प्रस्तावित लेखकों की सूची मुख्यमंत्री को भेज दी गई है।

डिजिटल लायब्रेरी

पिछले दिनों दिल्ली में इण्टरनेशनल कान्फ्रेन्स ऑन डिजिटल लायब्रेरी का आयोजन हुआ। इस कान्फ्रेन्स का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने किया। इस कान्फ्रेन्स में 30 देशों के 400 से अधिक सूचना, पुस्तकालय तथा प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों ने भाग लिया। कान्फ्रेन्स की रिपोर्ट में कहा गया कि सूचना क्रान्ति के विस्फोट से अब घर बैठे ही विश्व को मनचाही पुस्तकें, दुर्लभ पांडुलिपियाँ, चित्र, दर्शनीय स्थल और विरासत की विशिष्ट वस्तुएँ कम्प्यूटर पर दृष्टिगत हो जायँगी। अब कम्प्यूटर के माध्यम से मनचाही पुस्तक पढ़ ही नहीं सुन भी सकेंगे। पारिवारिक पुस्तकालयों की जगह डिजिटल लायब्रेरी ले लेगी। किताबों को रखने की समस्या भी समाप्त हो जायगी। इस प्रकार बौद्धिक यांत्रिकता का युग प्रारम्भ हो रहा है।

रीतिकालीन काव्य : पुनरीक्षण संगोष्ठी

गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा 27 व 28 मार्च को रीतिकालीन काव्य : पुनरीक्षण संगोष्ठी आयोजित की गई। प्रथम सत्र की विषयवस्तु रीतिकालीन काव्य : पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता, द्वितीय सत्र रीतिकालीन काव्य : कथ्य के निकष पर तथा तृतीय सत्र की विषयवस्तु रीतिकालीन काव्य : शिल्प के निकष पर आयोजित की गई। तीनों सत्रों का सफल संचालन अकादमी की संयोजिका डॉ० मालती दुबे ने किया।

राजस्थान में भाषायी घमासान

राजस्थान विधानसभा ने विगत कांग्रेस शासनकाल में प्रस्ताव स्वीकृत किया कि राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किया जाय। इस प्रस्ताव को लेकर राजस्थान के भाषाविदों, लेखकों, विद्वतजनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं में घमासान मचा हुआ है।

भाषाविदों का कहना है कि राजस्थानी भाषा को स्पष्टरूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों की बोलियाँ भिन्न-भिन्न हैं। कहा जाता है कि राजस्थानी के नाम पर पश्चिम राजस्थान की मारवाड़ी बोली को प्रस्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

दूसरी ओर यह भी कहा जा रहा है कि तथाकथित राजस्थानी भाषा को मान्यता दिये जाने से राष्ट्रभाषा हिन्दी की स्थिति कमजोर हो जायगी और इससे ब्रजभाषा, मालवी, ढुंढारी, मेवाड़ी, हाड़ोती, वागड़ी और शेखावाटी बोलने वालों में असंतोष होगा और उपद्रव हो सकता है। हिन्दी राष्ट्रीय एकता की भाषा है, उसे ही मान्यता मिलनी चाहिए।

आज राजस्थान जो कई छोटे-छोटे राज्यों और क्षेत्रों की इकाई है, अपनी क्षेत्रीय एवं सांस्कृतिक पहचान बनाये रखना चाहता है। मारवाड़ी जोधपुर क्षेत्र की भाषा है, मेवाड़ी उदयपुर की, शेखावाटी बीकानेर जयपुर की, कोई किसी से कम नहीं है अत: मारवाड़ी ही क्यों?

चुनाव के दौरान इसी को लेकर हिन्दी रक्षा समिति गठन करने का प्रयास किया गया। इसके लिए राजस्थान के प्रमुख व्यक्तियों की समिति गठित की गई है। इस समिति में राज्य राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्रीराम गोटेवाला, राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायधीश श्री डी०एल० मेहता, श्री एस०एन० भार्गव, संस्कृत विद्वान् कलानाथ शास्त्री, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर के पूर्व कुलपति श्री पी०एल० चतुर्वेदी प्रमुख हैं।

जीवितराम सेतपाल पुरस्कृत

हिन्दी एवं सिन्धी के साहित्यकार जीवितराम सेतपाल को राजस्थान सिन्धी अकादमी (जयपुर) द्वारा 'नायाब सुगन्ध' सर्वश्रेष्ठ एकांकी के लिए 28 मार्च 2004 को राजस्थान सिन्धी साहित्य-अकादमी (जयपुर) के रजत जयन्ती महोत्सव में शाल-श्रीफल से सम्मानित करते हुए प्रमाण-पत्र, प्रतीक चिह्न एवं नकद राशि प्रदान की गयी।

भारत रंग महोत्सव में 'अभंग-गाथा' का प्रदर्शन

पिछले कई वर्षों से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा भारत रंग महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देशभर से और विदेशों से भी विभिन्न रंग-केन्द्रों की विशिष्ट प्रस्तुतियों का चयन किया जाता है। इस बार भी भारत रंग महोत्सव-2004 (20 मार्च से 8 अप्रैल) में कई देशों की प्रस्तुतियों के साथ-साथ हिन्दी और भारतीय भाषाओं की विशिष्ट नाट्य कृतियों का प्रदर्शन हुआ। इस बार डॉ० नरेन्द्र मोहन का नाटक 'अभंग-गाथा' इस महोत्सव में जब श्रीराम सेंटर के मुख्य प्रेक्षागृह में श्री सतीश देव

के निर्देशन में 23 मार्च को उज्जैन के रंग-उत्सव के कलाकारों द्वारा मंचित हुआ तो यह रंगकर्मियों और नाट्यप्रेमियों के लिये नाटकीय शब्द को रंग-कर्म में ढलते हुए देखने का अपूर्व अनुभव क्षण था। अभिनय, दृश्य-बंध, प्रकाश और संगीत के संयोजन में कसी यह प्रस्तुति कई स्तरों पर दर्शकों को प्रेरित-उद्वेलित करती रही। इतिहास से वर्तमान में और वर्तमान से इतिहास में यह नाटक इतनी सहजता से आता-जाता रहा कि मानव नियति, संघर्ष और विडम्बना के कई रंग-ग्रॉफ बनते-मिटते रहे और दर्शकों के अन्तर्मन को बेंधते रहे। बड़ी बात यह कि रंग-साधनों से कसी-तनी और नाटकीय विचार के विभिन्न पहलुओं से समन्वित यह प्रस्तुति एक ऐसा प्रयोग था जिसमें कोई झोल न दिखा।

पात्रों ने अपने सजीव अभिनय द्वारा लेखकीय आशय को अधिक सहज और अर्थगर्भित बनाने का प्रयास किया।

नाटक की प्रस्तुति में गीत और संगीत का अपूर्व सामंजस्य दिखा। अभंगों का गायन और उनका लयात्मक आवर्तन नाटकीय तनाव को उभारने में सक्षम रहा। साजों की संगति में अभंग की लय और प्रवाह के आरोह-अवरोह ने दर्शकों को पूरी प्रस्तुति में अन्त तक बाँधे रखा। दृश्यबंध और वेशभूषा के निर्वाह में मध्यकालीन भारतीय इतिहास जीवंतता से साकार हो उठा। सूर्योदय, सूर्यान्त, रात्रि जैसे दृश्यों को भी निर्देशक ने अपनी परिपक्व कल्पना-शक्ति से सजीव कर दिया। नाटकीय कथ्य और रंग-कर्म की सहभागिता ने पूरी प्रस्तुति को एक लय-ताल में बाँध दिया। इसमें सन्देह नहीं कि अभंग-गाथा का यह प्रदर्शन भारत रंग महोत्सव की एक विशेष प्रस्तुति के तौर पर याद रखा जायेगा।

'महाभारत' के तीन दिन

पिछले दिनों साहित्य अकादमी दिल्ली स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर 'महाभारत : पाठ, संदर्भ, व्याख्याएँ' विषय पर तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। डॉ० विद्यानिवास मिश्र को बीज वक्तव्य प्रस्तुत करना था, अस्वस्थता के कारण उनकी अनुपस्थिति में उनका वक्तव्य पढ़ा गया। मिश्रजी के वक्तव्य का सार था—महाभारत के बिना गीता का अर्थ समझ में नहीं आ सकता है, उसी तरह गीता के बिना महाभारत का।

प्रख्यात विद्वान् एवं सांसद डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी ने कहा—'महाभारत' प्राचीन भारत की इनसाइक्लोपीडिया है। यह सम्पूर्ण भारत का ऐसा वाङ्मय है, जिसके घेरे में तत्काल राजनीतिक, समाजशास्त्र, कानून, संस्कृति आते हैं। महाभारत जीवन की एक समग्र किताब ही नहीं, एक साथ इतिहास एवं काव्य दोनों है।

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ० गोपीचंद नारंग ने कहा महाभारत एक ऐसा मिथ है, जो इतिहास की तरह है और ऐसा इतिहास है जो मिथ की तरह है।

संगोष्ठी में अनेक देशी तथा विदेशी विद्वानों ने भाग लिया, जिनमें प्रमुख थे—डॉ० हरिश्चन्द्र थोराठ, डॉ० अजय मालवीय, डॉ० भगवानदास पटेल, प्रभाकर श्रोत्रिय, कादंबिनी प्रियंवदा, आलोक भल्ला, जी०वी० सुब्रह्मण्यम, उदय मेम्प्रे, कपिला वात्स्यायन, स्कालेस्टिका कुज्जूर।

हाल के दिनों में साहित्य अकादेमी द्वारा महाभारत जैसे महाग्रन्थ पर आयोजित यह एक ऐसा पवित्र साहित्यिक यज्ञ-अनुष्ठान था जिसमें प्रतिभागियों ने गम्भीरता के साथ न केवल विचार-विमर्श में हिस्सा लिया बल्कि अपने लिए महाभारत का एक नया अर्थ ढूँढ़ते अपने वतन लौटे। इस संगोष्ठी का इसीलिए ऐतिहासिक महत्त्व है। **—साधना अग्रवाल**

सुदर्शन नारंग 65 वर्ष के हुए

वरिष्ठ कथाकार सुदर्शन नारंग का 65वाँ जन्मदिन (28 अप्रैल) को जनवादी लेखक संघ, हापुड़ द्वारा आयोजन किया गया। इस समारोह में हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने भागीदारी की तथा बाईस पुस्तकों के लेखक सुदर्शन नारंग को न केवल जन्मदिन की बधाई ही दी बल्कि उनके दीर्घायु होने की कामना भी की। समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कथाकार एवं कवि जे०एन०यू० के प्रोफेसर डॉ० गंगाप्रसाद विमल थे तथा अध्यक्षता सुपरिचित कवि उपेन्द्रकुमार ने की। कार्यक्रम का संचालन कहानी लेखक एवं पत्रकार अवधेश श्रीवास्तव ने किया।

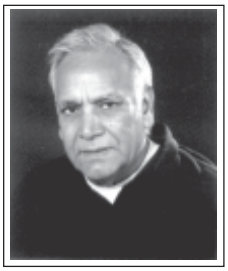

शिखर पुरस्कार से कमलेश्वर और कृष्णा सोबती सम्मानित

पिछले दिनों पटना में बिहार सरकार ने साहित्यकार कृष्णा सोबती और कमलेश्वर को आचार्य शिवपूजन सहाय शिखर सम्मान से सम्मानित किया। दोनों व्यक्तियों को एक-एक लाख रुपये और प्रशस्ति-पत्र दिये गये। पत्रकार प्रभाष जोशी और भारत डोगरा को राजेन्द्र माथुर स्मृति पत्रकारिता पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रत्येक व्यक्ति को 51 हजार रुपये और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये गये। सम्मान-समारोह बिहार विधान परिषद के सभागार में परिषद के सभापति जाबिर हुसैन के सभापतित्व में हुआ। समान-समारोह की उल्लेखनीय विशेषता यह थी कि सभागार में उपस्थित चारों व्यक्तियों को दर्शक-दीर्घा में जाकर सम्मानित किया गया।

भाषा शोध संस्थान

हरियाणा सरकार पंचकुला में निर्मित होने वाले संस्कृति भवन में हिन्दी, उर्दू, संस्कृत और पंजाबी भाषाओं के विकास के लिए भाषा शोध संस्थान की स्थापना कर रहा है। यहाँ हरियाणा शब्द संग्रह केन्द्र भी होगा।

वैज्ञानिक और औद्योगिक शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार तथा हरियाणा साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में औद्योगिक शब्दावली और प्रबन्ध-लेखन पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में हरियाणा के नगर विकास मंत्री श्री सुभाषा गोयल ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद हिन्दी भाषा का अत्यधिक विकास हुआ किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे अपेक्षित मान्यता नहीं प्राप्त हुई यद्यपि हिन्दीभाषी विद्वान् अपने स्तर से इसके लिए प्रयत्नशील हैं।

गोदान तथा निर्मला पर फिल्म

बहुत दिनों तक हिन्दी कथा कृतियों पर फिल्म बनती रही हैं। साहित्य कृतियों पर आधारित प्रेमचंद के धारावाहिक तो बनते रहे हैं किन्तु 'गोदान' ऐसे विशालकाय उपन्यास पर फिल्मी साहित्यकार गुलजार फिल्म बना रहे हैं। 'निर्मला' पर भी वे फिल्म बनायेंगे। हिन्दी सिनेमा पूर्णतया बाजारू होती जा रहा है, मारधाड़, अपराध यही उसकी कथा-वस्तु रह गई है। यह अपराध को बढ़ा रही है। ऐसे में साहित्यिक कृतियाँ विशेषकर प्रेमचंद के उपन्यास सामाजिक संवेदना जागृत करने में पूर्णतया सक्षम हैं।

भाषायी सहिष्णुता कब आयेगी ?

पिछले दिनों कर्नाटक के राज्यपाल श्री टी०एन० चतुर्वेदी ने निर्देश दिया था कि सरकारी आदेश कन्नड़ के अलावा अन्य भाषाओं में भी प्रसारित किये जायँ। राज्यपाल के इस आदेश को कन्नड़ भाषा विरोधी माना गया। श्री चतुर्वेदी ने कहा कि वे कन्नड़ के इतिहास और उसकी गरिमा से परिचित हैं, उनका आशय कन्नड़ की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचाना नहीं है, उनका कहना है कि अल्पसंख्यक जो कन्नड़ भाषा से परिचित नहीं हैं उन्हें भी सरकारी आदेश की सही जानकारी करानी चाहिए।

'यह मेरा हिन्दुस्तान' पुस्तक सार्वजनिक वाचनालय और ग्राम पंचायत को उपहार के रूप में पाने के लिए इस पते पर सम्पर्क करें—

'दाल रोटी', 13, रशमन अपार्टमेंट, उपासनी हॉस्पिटल के ऊपर, एस०एल० रोड, मुलुंड (प०), मुम्बई-400 080

बनाएँ पुस्तकों को दोस्त अपना

— कामना झा

आज समाज की उन्नति और राष्ट्र के विकास के लिए यह अति आवश्यक हो गया है कि देश को संगठित और सुरक्षित रखने का दायित्व प्रत्येक नागरिक अपना सर्वप्रथम कर्त्तव्य समझे। फिर भला अपने कर्त्तव्य की पूर्ति में स्त्रियाँ किसी भी हाल में पीदे क्यूँ रहें।

अगर आप शिक्षित हैं और अपना अधिकतर समय घर में बिताती हैं तो भी आप घर बैठे समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य की पूर्ति काफी हद तक कर सकती हैं।

आप शिक्षित हैं तो आपके घर में कुछ न कुछ किताबें जरूर होंगी। समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, कुछ कहानियों की किताबें या फिर आपके घर में स्कूल जाने वाले बच्चे हैं तो उनकी कोर्स की किताबें तो जरूर होंगी। अक्सर देखा जाता है कि बच्चे जब नयी कक्षाओं में चले जाते हैं तो स्त्रियाँ उनकी पुरानी किताबें कबाड़ी को बेच देती हैं या फिर स्टोररूम में एक कोने में रख देती हैं। एक तरह से यह पुस्तकों का अपमान है।

पुराने समय से जरूरत है इनकी

इतिहास गवाह है कि प्रारम्भ से मध्ययुग के अन्त तक पुस्तकालय की स्थापना पारिवारिक उपयोग के लिए की जाती थी। विद्वान और संत महात्मा देश की सांस्कृतिक निधि के रूप में उनका संग्रह कर सुरक्षित रखते थे। धनी व्यक्ति अपनी शोभा और प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए पुस्तकों को अपने यहाँ सजाकर रखते थे। राजा-महाराजा ज्ञान सम्पदा, पुस्तक प्रेम और ऐश्वर्य के रूप में पुस्तकालय की स्थापना करते थे। रोम में स्थित प्राचीन पुस्तकालय की स्थापना वहाँ के तत्कालीन राजा के पुस्तक प्रेम के कारण की गई थी। लेकिन आज के इस आधुनिक युग में पुस्तकालय का क्षेत्र और उद्देश्य काफी विस्तृत हो गया है। आज पुस्तकालय का उद्देश्य है शिक्षा, सूचना और ज्ञान। इसके लिए जरूरी है आप इन्हें जब-तब पढ़ें तथा औरों को पढ़ने के लिए दें।

उपयोगिता समझें

पुस्तकें हमारे लिए बहुत उपयोगी होती हैं। इन्हें कबाड़ी के हाथ बेचकर या स्टोर रूम में बन्द करके इनका अपमान ना करें बल्कि इन्हें अपना सच्चा दोस्त बनाएँ। दोस्त तो वह होता है जो हमारे साथ रहे, हमारी भावनाओं को जाने-समझे, जिसके साथ हम अपनी भावनाओं को बाँट सकें। पुस्तकें यह सब कर सकती हैं। आपके मित्र कभी भी आपको धोखा दे सकते हैं। लेकिन एक अच्छी पुस्तक आपका साथ कभी नहीं छोड़ती। वह पग-पग पर आपकी सहायता करती है। पुस्तकें आपकी सच्ची मित्र हो सकती हैं, अगर आप इनके साथ थोड़ी सी हमदर्दी और थोड़ा सा प्यार जताएँ। इसके लिए सबसे पहले आप अपने घर में उपलब्ध सभी किताबों को इकट्ठा करें। हरेक विषय की पुस्तकें जिसमें प्रतिदिन का अखबार भी हो सकता है और मैगजीन भी हो सकती है उन्हें इकट्ठा करें। कुछ इधर-उधर की किताबें हैं तो उन्हें भी ढूँढ़ निकालें। अपने बच्चों की पिछली कक्षाओं की किताबों को भी एकत्र करें। फिर उन सभी किताबों का वर्गीकरण करें।

आज समाज के प्रत्येक सदस्य को खासकर स्त्रियों को साक्षर और शिक्षित होना अनिवार्य है। आप शिक्षित हैं तो आपका यह दायित्व बन जाता है कि अशिक्षित को साक्षर करें। उन्हें पुस्तकों का महत्त्व समझाएँ।

निरक्षरों को साक्षर कर सकती हैं। स्वाध्याय से अपने को अपटूडेट बनाए रख सकती हैं। घर के बच्चे पुस्तकों का महत्त्व जानेंगे, उन्हें सँभालकर रखना सीखेंगे वहीं उनमें भी पढ़ने की आदत बनेगी।

जिन्दगी की दौड़ में पुस्तकें हमेशा साथ देती हैं। पुस्तकें आपकी सच्ची दोस्त ही नहीं आपकी मार्गदर्शक भी होती हैं। एक अच्छी पुस्तक हमेशा आपकी सहायक होती हैं। महात्मा गाँधी का कहना था, ''जिन्हें पुस्तक पढ़ने का शौक है वह व्यक्ति कभी दुःखी नहीं रह सकता।'' पुस्तकों को सम्मान देना सीखें। अगर आपने इन्हें सम्मान देना सीख लिया तो यकीन मानें, ये पुस्तकें जिन्दगीभर आपको दूसरों से सम्मान दिलाती रहेंगी। **—'जागरण सखी' से साभार**

पं० चन्द्रबली पाण्डेय
आइये जन्म शताब्दी पर याद करें

12 भाषाओं के विद्वान् पं० चन्द्रबली पाण्डेय का, जिनका जन्म 1904 ई० में आजमगढ़ में हुआ था, 1958 ई० में काशी में निधन हुआ। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा मौलवी महेशप्रसाद के निकटतम पाण्डेयजी अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाओं में पारंगत थे। हिन्दी भाषा और नागरी लिपि के लिए वे संघर्ष करते रहे। हिन्दी के स्थान पर खिचड़ी हिन्दुस्तानी भाषा के प्रबल विरोधी थे। उनका कहना था अरबी-फारसी सभी नागरी लिपि में सुगमता और सुस्पष्टतापूर्वक लिखी और पढ़ी जा सकती है। पाण्डेयजी की प्रमुख रचनाएँ हैं—उर्दू का रहस्य (1940 ई०), तसव्वुफ अथवा सूफीमत (1954 ई०), भाषा का प्रश्न (1939 ई०), राष्ट्रभाषा पर विचार (1945 ई०)।

त्याग, सरलता और सादगी की प्रतिमूर्ति चन्द्रबलीजी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति रहे। हिन्दी में विश्वविद्यालयीय परिधि के बाहर रहकर जो शोधपूर्ण कार्य किया वह अविस्मरणीय है। डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी के अनुसार—''पाण्डेजी के एक-एक पैम्फलेट भी डाक्टरेट के लिए पर्याप्त हैं।''

लोक संस्कृति के विद्वान्
डॉ० कोमल कोठारी

अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय ने सुप्रसिद्ध लोक साहित्यविद तथा राजस्थान के प्रमुख सांस्कृतिक शोधकर्ता कोमल कोठारी जिनका पिछले दिनों 20 अप्रैल को जोधपुर में निधन हो गया के बौद्धिक अवदान के लिए न्यूयार्क में 20 मई 2004 को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। विश्व के अनेक देशों के शोधकर्ता और संस्थाओं के प्रतिनिधि द्वारा कोमल कोठारीजी के निर्देशन में लोकगीतों पर हुए शोध कार्यों और लोकसाहित्य में उनके अवदान पर शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

पद्मभूषण से सम्मानित श्री कोठारी ने प्रदर्शित कला के प्रलेखन में प्रमुख भूमिका प्रस्तुत की है। इतिहास की मौखिक परम्परा को लेखबद्ध किया। श्री कोठारी ने राजस्थान के लोक संगीत, संगीत वाद्य, कठपुतली, वस्त्र, आभूषण, नाट्यरूपों, वीरगाथा और देवी-देवताओं पर व्यापक और विस्तृत कार्य किया। रूपायन संस्थान के सचिव श्री कुलदीप कोठारी ने बताया कि जनसंस्कृति म्यूजियम में कोमल कोठारी की समस्त उपलब्धियों को संरक्षित किया जायगा।

पहले पेट में थी अब बाहर आ गई

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' गणेशशंकर विद्यार्थी के 'प्रताप' में सहयोगी सम्पादक थे। पं० माखनलाल चतुर्वेदी भी उनके अभिन्न मित्र थे। एक दिन विद्यार्थीजी के कार्यालय में सभी बैठे थे तभी पण्डित सुन्दरलाल आये। नवीनजी ने उनको देखते ही साक्षात् दण्डवत किया। गणेशशंकरजी ने पूछा—बालकृष्ण आज क्या बात है जो पंडितजी को दण्डवत कर रहे हो।

नवीनजी ने कहा—पण्डितजी को दाढ़ी आ गई है।

''दाढ़ी तो आती ही है, इसमें नई बात क्या है?''

नवीनजी बोले—''पहले पेट में थी अब बाहर आ गई है।''

सुन्दरलालजी का दुर्वासा रूप प्रगट हुआ, वे नवीनजी को मारने दौड़े, नवीनजी ने गणेशशंकरजी की कुर्सी के पीछे छिप कर अपनी रक्षा की।

मुँह में रखिये

मालवीयजी के समय की बात है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में उर्दू-फारसी के विद्वान महेशप्रसाद थे जिन्हें मौलवी साहब कहा जाता था। वे पक्के आर्य समाजी थे, अपनी पुत्री को वेद पढ़ाना चाहते थे, उस समय किसी स्त्री को वेद पढ़ना-पढ़ाना वर्जित था। मौलवी साहब ने विश्वविद्यालय पर दबाव डाला, अन्त में मालवीयजी को बाध्य होकर उनकी पुत्री के वेद अध्ययन की अलग व्यवस्था करनी पड़ी।

सनातनियों को यह बात अच्छी नहीं लगी, वे मौलवी साहब को अपमानित करने की युक्ति करते रहते थे। एक दिन कुछ युवक उनके निवास पर पहुँचे। मौलवी साहब कुछ लोगों से बात कर रहे थे। युवकों ने कहा—मौलवी साहब हम आपके सत्यार्थ प्रकाश पर लघुशंका करना चाहते हैं। मौलवी साहब ने सरल ढंग से कहा—मैं इन महानुभावों से बात कर लेता हूँ तब तक आप लोग अपनी लघु शंका मुँह में रखिए।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रमुख ग्रन्थ

मनीषी, संत, महात्मा

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150.00
नीब करौरी बाबा के अलौकिक प्रसंग *बच्चन सिंह* 300.00
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० गिरिराज शाह* 150.00
सोमबारी महाराज *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50.00
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00
स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *डॉ० भवानीलाल भारतीय* 120.00
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy *N.L. Gupta* 400.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 250.00
पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी *अशोककुमार चटर्जी* 120.00
Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400.00
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150.00
करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00
महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00
भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
भारत के महान योगी (भाग 1-10) 5 जिल्द में *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)* 100.00
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120.00
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 100.00
महात्मा बनादास : जीवन ओर साहित्य *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 60.00
पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 70.00
भुड़कुड़ा की संत परम्परा *डॉ० इन्द्रदेव सिंह* 150.00

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

धन धन मातु गङ्ग *डॉ० भानुशंकर मेहता* 300.00
गङ्गा : पावन गङ्गा *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00
कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50.00
पूर्ण कामयोग (कामना-सिद्धि और ध्यान के रहस्य) *गुरुश्री वेदप्रकाश* 120.00
उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली,* 150.00
सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60.00
सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा* 65.00
वाग्विभव *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 200.00
मारणपात्र *अरुणकुमार शर्मा* 250.00
वह रहस्यमय कापालिक मठ ,, 180.00
मृतात्माओं से सम्पर्क ,, 200.00
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी ,, 180.00
तीसरा नेत्र (प्रथम खण्ड) ,, 250.00
तीसरा नेत्र (द्वितीय खण्ड) ,, 300.00
मरणोत्तर जीवन का रहस्य ,, 300.00
परलोक विज्ञान ,, 300.00
कुण्डलिनी शक्ति ,, 250.00
अभौतिक सत्ता में प्रवेश ,, 200.00
बृहत श्लोक संग्रह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 200.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00
धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुन्धरा मिश्र* 250.00
सोमतत्त्व *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100.00
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन *शारदाप्रसाद सिंह* 40.00
जपसूत्रम (प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती (प्रत्येक)* 150.00
जपसूत्रम (तृतीय से षष्ठ खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* यंत्रस्थ
वेद व विज्ञान ,, 180.00
रावण की सत्यकथा *रामनगीना सिंह* 60.00
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता) *हरीन्द्र दवे* 80.00
कृष्ण का जीवन संगीत *डॉ० गुणवंत शाह* 300.00
हिन्दी ज्ञानेश्वरी *अनु० ना० वि० सप्रे* 180.00
वेदार्थ पारिजात (2 खण्ड) *करपात्रीजी महाराज* 900.00
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डों में) *श्री श्यामाचरण लाहिड़ी* 375.00
कथा राम कै गूढ़ (तुलसी) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 125.00
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर) *सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 150.00
कृष्णायन *रामबदन राय* 200.00
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 100.00
अनंत की ओर *अशोककुमार* 90.00
रामायण-मीमांसा *करपात्रीजी महाराज* 250.00
भक्ति-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 190.00
श्रीभागवत-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 70.00
श्रीराधा-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 50.00
भ्रमर-गीत *करपात्रीजी महाराज* 90.00
गोपी-गीत *करपात्रीजी महाराज* 200.00
सुखी जीवन : कैसे ? *एल०पी० पाण्डेय* 90.00
एकनाथ की भागवत *ना०वि० सप्रे* यंत्रस्थ
महाराष्ट्र के कर्मयोगी *ना०वि० सप्रे* यंत्रस्थ

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के प्रमुख ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना 80.00
क्रम-साधना 80.00
अखण्ड महायोग 80.00
श्रीकृष्ण प्रसंग 250.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा 130.00
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100.00
श्री साधना 50.00
दीक्षा 80.00
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2) 80.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन) 300.00
ज्ञानगंज 60.00
प्रज्ञान तथा क्रमपथ 80.00
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना 50.00
परातंत्र साधना पथ 40.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1) 200.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2) 120.00
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 40.00
काशी की सारस्वत साधना 35.00
भारतीय साधना की धारा 30.00
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि 100.00
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त 120.00

इतिहास, संस्कृति और कला

Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Verma* 300.00
Benaras : The Sacred City *E.B. Havell* 150.00
Prinsep's Benares Illustrated *James Prinsep Int. by Dr. O.P. Kejariwal* 800.00
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200.00
Life in Ancient India *Dr. Mahendra Pratap Singh* 100.00
The Imperial Guptas Vol. I-II *Dr. P.L. Gupta* (Each) 200.00
प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति *प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर* 150.00
भारतीय मुसलमान *डॉ० किशोरीशरण लाल* 60.00
महाभारत का काल निर्णय *डॉ० मोहन गुप्त* 300.00
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा *डॉ० लल्लनजी गोपाल* 150.00

प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक
डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव 200.00
प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ *डॉ० नीहारिका* 200.00
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ *डॉ० श्रीराम गोयल* 120.00
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन)
प्रो० ए०के० नारायण 300.00
प्राचीन भारत *डॉ० राजबली पाण्डेय* 150.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-1 : मौर्य-काल से कुषाण(गुप्त-पूर्व) काल तक) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-2 : गुप्त-काल 319-543 ई०) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 80.00
गुप्त साम्राज्य *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 200.00
भारतीय वास्तुकला *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के ,, 170.00
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ ,, 45.00
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ (600 से 1200 ई.) *डॉ० ओंकारनाथ सिंह* 70.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 450.00
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु ,, 200.00
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 120.00
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला
डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी, डॉ० कमल गिरि 150.00
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण ,, 325.00
भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क
डॉ० आर० गणेशन 250.00
इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्ड चौबे* 150.00
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन
डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव 80.00
दिल्ली के सुलतानों की धार्मिक नीति
(1206-1526 ई.) *डॉ० निर्मला गुप्ता* 80.00
सल्तनतकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था *डॉ० उषारानी बंसल* 50.00
Daishik Shastra *Badrishah Thuldharia* 250.00
प्राचीन भारत में यक्ष पूजा *डॉ० कमलेश दूबे* 250.00
आसन की योग मुद्राएँ *डॉ० रविन्द्रप्रताप सिंह* 250.00
शिव की अनुग्रह मूर्तियाँ
डॉ० शान्तिस्वरूप सिन्हा 250.00
एक विश्व : एक संस्कृति
डॉ० ब्रजवल्लभ द्विवेदी 150.00
प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन *डॉ० चन्द्रदेव सिंह* 150.00
शुंगकालीन भारत *सच्चिदानन्द त्रिपाठी* 50.00
चालुक्य और उनकी शासन-व्यवस्था
डॉ० रेणुका कुमारी 60.00
बुद्ध और बोधिवृक्ष *डॉ० शीला सिंह* 150.00
बौद्ध तथा जैनधर्म *डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह* 180.00
कम्बुज देश का राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास *डॉ० महेशकुमार शरण* 175.00
प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार *डॉ० हीरालाल गुप्त* 30.00
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन
डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव 80.00
भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व
राष्ट्रीय पं० श्री ब्रजवल्लभ द्विवेदी 60.00
धन धन मातु गङ्ग *डॉ० भानुशंकर मेहता* 300.00
शिव काशी *डॉ० प्रतिभा सिंह* 400.00
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00
काशी की पाण्डित्य परम्परा
पं० बलदेव उपाध्याय 600.00
काशी के घाट : कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ० हरिशंकर* 300.00
बना रहे बनारस *विश्वनाथ मुखर्जी* 30.00
स्वतन्त्रता-आन्दोलन और बनारस
ठाकुरप्रसाद सिंह 120.00

हिन्दी साहित्य

साहित्य-शास्त्र

आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 150.00
नया काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 80.00
काव्यरस : चिन्तन और आस्वाद ,, 50.00
काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 80.00
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास सिद्धान्त और वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* 70.00
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र
डॉ० अर्चना श्रीवास्तव 80.00

व्याकरण, भाषा और कोश

A Comparative Study of Bhojpuri & Bengali *Dr. Shruti Pandey* 150.00
कार्यालयीय हिन्दी *डॉ० विजयपाल सिंह* 80.00
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना
डॉ० विजयपाल सिंह 65.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी सजिल्द 250.00
अजिल्द 120.00
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० भोलाशंकर व्यास 80.00
नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश
डॉ० बदरीनाथ कपूर 200.00
प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार *रघुनन्दनप्रसादद शर्मा* 200.00

संत साहित्य

संत कबीर और भगताही पंथ *डॉ० शुकदेव सिंह* 100.00
कबीर और भारतीय संत साहित्य
रामचन्द्र तिवारी 100.00
तुलसीकृत विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० रामअवतार पाण्डेय* 320.00
हिन्दी संत काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन *प्रो० वासुदेव सिंह* 380.00

साहित्य समीक्षा

मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ
डॉ० रामकली सराफ 80.00
साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति
सं० डॉ० रतनकुमार पाण्डेय 150.00
साहित्य और संस्कृति *डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० राजेश सिंह* 140.00
हिन्दी का गद्य-साहित्य (चतुर्थ 2004 संस्करण)
डॉ० रामचन्द्र तिवारी सजिल्द 600.00
अजिल्द 400.00
हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 200.00
क्रान्तिकारी कवि निराला *डॉ० बच्चन सिंह* 80.00
अक्षर बीज की हरियाली
डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ 180.00
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा *डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी* 80.00
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य संसार *डॉ० मञ्जु त्रिपाठी* 100.00
भवानीप्रसाद मिश्र और उनका काव्य संसार *डॉ० अनुपम मिश्र* 160.00
'स्वदेश' की साहित्य चेतना
डॉ० प्रत्यूष दुबे 150.00

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य तथा समीक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
डॉ० रामचन्द्र तिवारी सजिल्द 70.00
अजिल्द 40.00
त्रिवेणी *सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 30.00
चिन्तामणि *सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 50.00

अज्ञेय साहित्य-समीक्षा

अज्ञेय : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन
डॉ० ज्वालाप्रसाद खेतान 40.00
अज्ञेय : चेतना के सीमान्त ,, 80.00
अज्ञेय : शिखर अनुभूतियाँ ,, 80.00
अज्ञेय की गद्य-शैली *डॉ० सावित्री मिश्र* 50.00
अज्ञेय और 'शेखर : एक जीवनी'
डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी 40.00

प्रसाद-साहित्य

ध्रुवस्वामिनी (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 9.00
ध्रुवस्वामिनी (मूल नाटक तथा समीक्षा)
डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव 20.00
प्रसाद तथा आँसू (मूल) *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 8.00
प्रसाद तथा 'आँसू' (मूल, टीका तथा समीक्षा) *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 40.00
कामायनी (काव्य) *जयशंकरप्रसाद* 20.00
लहर *जयशंकरप्रसाद* 15.00
चन्द्रगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 25.00

स्कन्दगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 20.00
अजातशत्रु (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 16.00
अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'
सं० पुरुषोत्तमदास मोदी 150.00
प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ *डॉ० किशोरीलाल गुत* 50.00
प्रसाद स्मृति वातायन *सं० विद्यानिवास मिश्र* 150.00

प्रेमचंद-साहित्य

कर्मभूमि (उपन्यास) *प्रेमचंद* 40.00
निर्मला *प्रेमचंद* 25.00
संक्षिप्त गबन *प्रेमचंद* 30.00
गबन (सम्पूर्ण) *प्रेमचंद* अजिल्द 45.00
गोदान *प्रेमचंद* अजिल्द 60.00

कबीर-साहित्य

कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित) *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*
प्रथम खंड : रमैनी सजि. 80.00 अजि. 50.00
द्वितीय खंड : सबद सजि. 300.00 अजि. 200.00
तृतीय खंड : साखी सजि. 250.00 अजि. 140.00
कबीर काव्य कोश *डॉ० वासुदेव सिंह* 150.00
कबीर वाणी पीयूष *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह* 50.00
कबीर और भारतीय संत साहित्य
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 100.00
हिन्दी सन्तकाव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० वासुदेव सिंह* 320.00

लोक साहित्य

भोजपुरी लोक साहित्य
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय 400.00
लोकगीतों के संदर्भ और आयाम
डॉ० शान्ति जैन 700.00
पुरइन-पात (भोजपुरी साहित्य संचयन)
सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन', डॉ० चितरंजन मिश्र 200.00

काव्य-ग्रन्थ

जौहर *श्यामनारायण पाण्डेय* 100.00
परशुराम (खण्ड-काव्य) *''* 90.00
धूमिल की कविताएँ *सं० डॉ० शुकदेव सिंह* 80.00
वेलि क्रिसन रुकमणी री
सं० डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित 80.00
मिरगावती (कुतुबन कृत)
सं० डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त 150.00
रीति काव्यधारा *डॉ० रामचन्द्र तिवारी व डॉ० रामफेर त्रिपाठी* 50.00
कीर्तिलता और विद्यापति का युग
डॉ० अवधेश प्रधान 40.00

कविता-संग्रह (मौलिक कृतियाँ)

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य-सुधा
डॉ० शिवकुमार मिश्र 16.00
राष्ट्रप्रेम के गीत *पं० कृपाशंकर शुक्ल* सजि. 150.00 अजि. 100.00
वेद की कविता *प्रभुदयाल मिश्र* 120.00
कंथा-मणि *कुबेरनाथ राय* 100.00
गीताञ्जलि (रवीन्द्र की कविताओं का काव्यानुवाद) *डॉ० मुरलीधर श्रीवास्तव* 60.00
कालिदास : मेघदूत (काव्यानुवाद)
डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा 20.00
माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः
डॉ० शम्भुनाथ सिंह 50.00
कल सुनना मुझे *धूमिल* 25.00

उपन्यास

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य *युगेश्वर* 140.00
चरित्रहीन *आबिद सुरती* 180.00
बबूल *डॉ० विवेकी राय* 40.00
पांचाली (नाथवती अनाथवत्) *डॉ० बच्चन सिंह* 125.00
ननकी *बच्चन सिंह (पत्रकार)* 60.00
तरुण संन्यासी (विवेकानंद)
राजेन्द्रमोहन भटनागर 120.00
सागरी पताका *राधामोहन उपाध्याय* 250.00
मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास)
प्रभुदयाल मिश्र 120.00
नसीब अपना-अपना *विमल मित्र* 40.00
मुझे विश्वास है *विमल मित्र* 60.00
महाकवि कालिदास की आत्मकथा
डॉ० जयशंकर द्विवेदी 80.00
गाँधी की काँवर *हरीन्द्र दवे* 40.00
बहुत देर कर दी *अलीम मसरूर* 60.00
मंगला *अनन्तगोपाल शेवड़े* 30.00
लोकऋण *डॉ० विवेकी राय* 80.00
चौदह फेरे *शिवानी* 100.00
खबर की औकात *बच्चन सिंह* यंत्रस्थ
ललिता (तमिल उपन्यास का अनुवाद)
अखिलन 25.00
बज उठी पायलिया (इळंगोवडिहळ् रचित शिलप्पदिकारम्) *रा० वीलिनाथन्* 50.00
नया जीवन *अखिलन* 60.00

नाटक, एकांकी (मौलिक तथा सम्पादित)

देवयानी : उत्कृष्ट पौराणिक नाटक
डॉ० एन० चन्द्रशेखरन् नायर 20.00
शताब्दी पुरुष *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 100.00
भारत-दुर्दशा *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 12.00
श्री चन्द्रावली नाटिका *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 16.00
अँधेर नगरी *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 12.00
गंगाद्वार *पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र* 25.00

साहित्यिक संस्मरण, जीवन चरित

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'
सं० पुरुषोत्तमदास मोदी 150.00
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : व्यक्तित्व चित्र
ज्ञानचंद जैन 200.00
वटवृक्ष (अमृतलाल नागर) की छाया में *कुमुद नागर* 200.00

संस्कृत साहित्य

संस्कृत व्याकरण तथा रचना

संस्कृत-शिक्षा (भाग-1) *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 12.00
संस्कृत-शिक्षा (भाग-2) *''* 12.00
संस्कृत-शिक्षा (भाग-3) *''* 15.00
प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी *''* 18.00
रचनानुवाद कौमुदी *''* 50.00
प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी *''* 96.00
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी (सम्पूर्ण) *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* सजिल्द 200.00 अजिल्द 170.00
संस्कृत-निबन्ध-शतकम् *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 80.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी सजिल्द 250.00 अजिल्द 120.00
अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी सजिल्द 250.00 अजिल्द 125.00
बालसिद्धान्तकौमुदी *ज्योतिस्वरूप मिश्र* 50.00
सिद्धान्त-कौमुदी (कारक प्रकरणम्)
ज्योतिस्वरूप मिश्र, उर्मिला मोदी 20.00
पाणिनीय शिक्षा *डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय* 24.00
तैत्तिरीय प्रातिशाख्यम् (प्रथम अध्याय)
डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय 20.00

रस, अलङ्कार, साहित्यशास्त्र तथा समीक्षा

भामिनीविलास का प्रस्ताविक-अन्योक्तिविलास (सटीक)
सं० पण्डित जनार्दन शास्त्री 50.00
अलङ्कार-दर्पण (साहित्य-दर्पण दशम् परिच्छेद एवं छन्दोमञ्जरी)
डॉ० जनार्दन गङ्गाधर रटाटे 15.00
चन्द्रालोक-सुधा एवं छन्दोमञ्जरी-सुधा *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 25.00
अभिनव रस सिद्धान्त *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 40.00
अभिनव का रस-विवेचन *नगीनदास पारेख* 100.00
वक्रोक्तिजीवितम् *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 100.00
रसाभिव्यक्ति *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 150.00
ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीका सहित)
डॉ० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल 50.00
मृच्छकटिक : शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन
डॉ० शालग्राम द्विवेदी 100.00
उपरूपकों का उद्भव और विकास
डॉ० इन्द्रा चक्रवाल 100.00
संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक
डॉ० आशारानी त्रिपाठी 225.00
संस्कृत साहित्य की कहानी *उर्मिला मोदी* 50.00

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास
डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी 200.00
भारतीय संस्कृति के मूल तत्व
डॉ० व्रजवल्लभ द्विवेदी 80.00
भारतीय दर्शन : सामान्य परिचय *''* 60.00

वैदिक-साहित्य

वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180.00
वेदचयनम् *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 60.00
ऋग्वेदभाष्यभूमिका *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 40.00
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी 125.00
तैत्तिरीयप्रातिशाख्यम् *डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय* 20.00

मूल ग्रन्थ, समीक्षा सहित

मुद्राराक्षसम् *सं० डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 100.00
कादम्बरी : कथामुखम्
डॉ० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी 40.00
उत्तररामचरितम् *डॉ० रामअवध पाण्डेय* 120.00
मेघदूतम् (कालिदास) *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 50.00
दशरूपकम् *पं० रमाशंकर त्रिपाठी* 150.00
अभिज्ञानशाकुन्तलम् *सं० डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80.00

समाजशास्त्र, दर्शन तथा मनोविज्ञान

धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद
प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुंधरा मिश्र 250.00
समाजदर्शन की भूमिका
डॉ० जगदीशसहाय श्रीवास्तव 150.00
ब्राह्मण-समाज का ऐतिहासिक अनुशीलन *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 200.00
प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन
डॉ० चन्द्रदेव सिंह 150.00
हिन्दू समाज : संघटन और विघटन
डॉ० पुरुषोत्तम गणेश सहस्रबुद्धे 50.00
अपराध के नये आयाम तथा पुलिस की समस्याएँ *परिपूर्णानन्दवर्म्मा* 50.00
पुलिसकर्मियों की समस्याएँ : समाजवैज्ञानिक अध्ययन
डॉ० विजयप्रताप राय 300.00
भारतीय पुलिस *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 80.00
सामाजिक व्यवस्था में पुलिस की भूमिका *चमनलाल प्रद्योत* 40.00

शिक्षा

Educational Philosophy of W.H. Kilpatric
Pratibha Khanna 300.00
Educational and Vocational Guidance in India *Dr. K.P. Pandey* 150.00
Teaching of English in India
Dr. K.P. Pandey, Dr. Amita 150.00
शैक्षिक अनुसंधान *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 100.00
शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम
डॉ० राजेश्वर उपाध्याय व डॉ० सरला पाण्डेय 80.00
भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं० मदनमोहन मालवीय
सं० डॉ० चन्द्रकला पाडिया 150.00
संसार के महान शिक्षाशास्त्री *डॉ० इन्द्रा ग्रोवर* 60.00
महान शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त
आर०आर० रस्क 80.00

वाणिज्य

सेविवर्गीय प्रबंध एवं औद्योगिक सम्बन्ध
डॉ० जगदीशसरन माथुर 160.00
Corporate Finance *Dr. V.S. Singh* 250.00

पत्रकारिता

हिन्दी पत्रकारिता (भारतेन्दु पूर्व से छायावादोत्तर काल तक) *डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह* 100.00
संसद और संवाददाता
ललितेश्वरप्रसाद सिंह श्रीवास्तव 150.00
इतिहास निर्माता पत्रकार *डॉ० अर्जुन तिवारी* 60.00
हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप
बच्चन सिंह (पत्रकार) 200.00
पत्र, पत्रकार और सरकार
काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर 120.00
प्रेस विधि *डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा* 100.00
संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता *डॉ० अशोककुमार शर्मा* 200.00
समाचार और संवाददाता
काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर 80.00
संवाद संकलन विज्ञान *नारायण व्यंकटेश दामले* 50.00
स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और पं० दशरथप्रसाद द्विवेदी *डॉ० अर्जुन तिवारी* 120.00
'स्वदेश' की साहित्य-चेतना *डॉ० प्रत्यूष दुबे* 200.00
हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान *बच्चन सिंह* 40.00
आधुनिक पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* 120.00
पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया *शिवप्रसाद भारती* 200.00
पराड़करजी और पत्रकारिता
डॉ० लक्ष्मीशंकर व्यास 30.00
आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता *डॉ० इन्द्रसेन सिंह* 120.00
The Rise and Growth of Hindi Journalism
Dr. R.R. Bhatnagar Ed. by Dr. Dhirendra Nath Singh 800.00
Mass Communication & Development
(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta 250.00
Journalism by Old and New Masters
(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta 250.00
Modern Journalism & Mass Communication
(Ed.) Dr. Baldeo Raj Gupta 250.00

सङ्गीत

राग जिज्ञासा *डॉ० देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 250.00
भारतीय सङ्गीत का इतिहास
डॉ० ठाकुर जयदेव सिंह 300.00
प्रणव-भारती *पं० ओङ्कारनाथ ठाकुर* 300.00
संगीतराज : नृपतिकुम्भ कर्ण प्रणीत : प्रथम खण्ड 60.00
भारतीय सङ्गीतशास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन *डॉ० विमला मुसलगाँवकर* 400.00
प्रेम रसायन एवं सङ्गीत मीमांसा *प्रेमलता शर्मा* 1500.00
Indian Music *Dr. Thakur Jaideva Singh* 450.00
Indian Aesthetics and Musicology
Dr. Premlata Sharma 500.00

अभिनय, भाषण, वार्ता

बोलने की कला *डॉ० भानुशंकर मेहता* 250.00

स्त्री विमर्श

स्त्रीत्व : धारणाएँ एवं यथार्थ
प्रो० कुसुमलता केडिया, प्रो० रामेश्वरप्रसाद मिश्र 180.00

Geography

भौगोलिक चिन्तन : उद्भव एवं विकास *डॉ० श्रीकांत दीक्षित* 250.00
Electoral Geography of India
Dr. S.K. Dikshit 250.00

Zoology

Fishes of U.P. & Bihar
Dr. Gopalji Srivastava (H.B.) 200.00
(P.B.) 100.00

Physics

Practical Physics
Dr. C.K. Bhattacharya (4 others) 60.00
Waves and Oscillations
Dongre & Bhattacharya 120.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन

(भारत के प्रमुख प्रकाशकों की पुस्तकों का विशाल संग्रह, 3000 वर्गफुट में शोरूम)

विशालाक्षी भवन, चौक पुलिस स्टेशन के बगल में
पो०बाक्स 1149, वाराणसी
फोन : (0542) (कार्यालय) 2413741, 2413082, (निवास) 2311423, 2436498, 2436349 ● फैक्स : (0542) 2413082
ई० मेल : sales@vvpbooks.com ● Website : www.vvpbooks.com

पुस्तक समीक्षा

हिन्दी का गद्य साहित्य

प्रथम संस्करण :
अप्रैल 1955 ई० (पृ० 319)
द्वितीय संस्करण :
अगस्त 1968 ई० (पृ० 625)
तृतीय संस्करण :
दिसम्बर 1992 ई० (पृ० 772)
चतुर्थ संस्करण :
जनवरी 2004 ई० (पृ० 928)

डॉ० रामचन्द्र तिवारी
अवकाशप्राप्त आचार्य एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

मूल्य : सजिल्द 600.00, पेपरबैक : 400.00
ISBN : 81-7124-358-4

आपका जन्म 4 जून 1924 ई० को जनपद वाराणसी के कुकुढ़ा नामक गाँव में हुआ था। 1943 ई० में आपने हाईस्कूल परीक्षा हरिश्चन्द्र हाईस्कूल, वाराणसी से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आपने कान्यकुब्ज कॉलेज, लखनऊ से 1945 में इण्टरमीडिएट परीक्षा तथा 1947 में लखनऊ विश्वविद्यालय से बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। लखनऊ विश्वविद्यालय से ही 1949 में आप प्रथम स्थान के साथ प्रथम श्रेणी में एम०ए० हुए। फिर वहीं से 1956 में 'शिवनारायणी सम्प्रदाय और उनका साहित्य' विषय पर आपने पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त की। 1952 से 1958 ई० तक आपने गोरखपुर के महाराणा प्रताप कॉलेज में अध्यापन किया तथा 1958 से 1984 ई० तक गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रवक्ता, रीडर और प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहे। जून, 1984 में आप प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हुए। 1985 में तीन माह के लिए आप विशिष्ट आमंत्रित आचार्य के रूप में सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर में भी रहे। तिवारीजी आरम्भ से ही एक अध्ययनशील और प्रतिभावान छात्र थे। बाद में एक शिक्षक के रूप में आपने पर्याप्त ख्याति अर्जित की और अपने छात्रों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय हुए। गूढ़ और जटिल विषय को भी सहज ढंग से सम्प्रेषित करने की अध्यापन-कला तिवारीजी की विशेषता है।

हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में तिवारीजी की मौलिक आलोचना-पुस्तकें हैं—रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति (1953 ई०), हिन्दी का गद्य साहित्य (1955 ई०), मध्ययुगीन काव्य साधना (1962 ई०), कबीर मीमांसा (1976 ई०), आलोचक का दायित्व (1981 ई०), आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1985 ई०), आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश (1986 ई०), प्रतापनारायण मिश्र (1992 ई०), हिन्दी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार (1996 ई०), आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ और दृष्टि (1997 ई०), योग के विविध आयाम (1997 ई०), तुलसीदास (1997 ई०), सरदार पूर्ण सिंह (1998 ई०), कथा राम कै गूढ़ (1999 ई०), भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी अलोचना (2000 ई०), कबीर और भारतीय संत साहित्य (2001 ई०), हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ (2004 ई०)। इनके अतिरिक्त तिवारीजी ने कुछ पुस्तकों का सम्पादन और कुछ के अनुवाद भी किये हैं। सम्पादित पुस्तकों में 'आधुनिक हिन्दी काव्य और कवि' (1962), श्रेष्ठ निबन्ध : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1979 ई०) रामचन्द्रिका (1982 ई०), रीति काव्यधारा (1995 ई०) तथा निबन्ध निकष (1997 ई०), रामचन्द्र शुक्ल संचयिता (2003 ई०) हैं और अनूदित पुस्तकों में नाथ योग : एक परिचय (1956 ई०) तथा साहित्य का मूल्यांकन (1963 ई०)। 'कविवर लेखराज, गंगा भरण और अन्य कृतियाँ' तथा 'तजकिय-ई-शुअरा ई हिन्द' शीर्षक पुस्तकें अभी प्रकाश्य हैं। तिवारीजी अस्सी वर्ष से ऊपर की आयु में अभी भी युवकोचित उत्साह से अध्ययन और लेखन में प्रवृत्त हैं। अत: उनके द्वारा लिखी जाने वाली अन्य कृतियों की भी सम्भावनाएँ शेष हैं। पुस्तकों के अतिरिक्त उनके सैकड़ों महत्त्वपूर्ण लेख और समीक्षाएँ विभिन्न पुस्तकों-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकों की भूमिकाएँ भी लिखी हैं जिन्हें पुस्तकाकार संकलित किया जाना शेष है। तिवारीजी की लगभग आधी दर्जन पुस्तकें उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थाना द्वारा विविध पुरस्कारों से पुरस्कृत हैं। वर्ष 1985 ई० में संस्थान ने उन्हें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नामित पुरस्कार से तथा 1995 ई० में 'साहित्य भूषण' सम्मान से सम्मानित किया है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद ने उन्हें 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि से तथा रामचन्द्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान, वाराणसी ने 'गोकुलचन्द्र शुक्ल पुरस्कार' से सम्मानित किया है। भारतीय हिन्दी परिषद तथा अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा भी वे सम्मानित किये जा चुके हैं।

तिवारीजी की आलोचना-पुस्तकों की सूची से स्पष्ट है कि आपके अध्ययन और शोध का क्षेत्र बहुत व्यापक है। आपने प्राचीन और नवीन दोनों ही प्रकार के साहित्य का गहन अनुशीलन किया है। विशेष रूप से संत और भक्ति साहित्य, कबीर और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के आप गम्भीर अध्ययेता और व्याख्याता हैं। इनसे सम्बन्धित आपकी पुस्तकों के कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। 'हिन्दी का गद्य साहित्य' नामक आपकी प्रसिद्ध पुस्तक के तो चार संस्करण हो चुके हैं और लगभग एक हजार पृष्ठों का यह वृहत् ग्रन्थ अपने विषय पर एक विश्वकोश की तरह है। यह तिवारीजी का ऐसा ग्रन्थ है जिसे वे जीवनभर लिखते रहे—अर्थात् 1955 ई० से आज तक। इसका हर संस्करण पहले से दूने आकार में प्रकाशित हुआ है। इसमें हिन्दी का पूरा गद्य-विस्तार और उसका वैभव एक जगह प्राप्त किया जा सकता है। इसमें हिन्दी गद्य का स्वरूप-विकास, उसकी विविध विधाओं का विकास, उसकी लघु विधाओं का विकास तथा हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का भी संक्षिप्त इतिहास देखा जा सकता है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण खण्ड है मूल्यांकन का जिसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से लेकर फणीश्वरनाथ रेणु तक अट्ठाईस विशिष्ट गद्यकारों का मूल्यांकन किया गया है।

तिवारीजी की आलोचना शोधपरक, सैद्धान्तिक और व्यावहारिक तीनों प्रकार की है। इसी तरह उनकी आलोचना दृष्टि भी ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक और मूल्यांकनपरक है। उन्होंने भारतेन्दु युग से लेकर आज तक की हिन्दी-समीक्षा के सामाजिक सन्दर्भ और उसके प्रभाव में निर्मित और प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का ऐतिहासिक दृष्टि से विवेचन किया है। इस क्रम में उन्होंने प्रमुख समीक्षकों द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों को उनकी समीक्षा-दृष्टि के आलोक में देखने की कोशिश की है। तिवारीजी की समीक्षा दृष्टि के निर्माण में भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का, हिन्दी के सन्त और भक्त कवियों का, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का तथा हिन्दी के नये रचनाकारों का भी योगदान देखा जा सकता है। विशेष रूप से वे कबीर की समत्व दृष्टि आचार्य शुक्ल के लोकमंगल से प्रभावित हैं। उनकी आलोचना की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी प्रामाणिकता और संतुलित दृष्टि। तिवारीजी जो कुछ लिखते हैं, बिना स्वयं जाँचे-परखे और संतुष्ट हुए नहीं। निन्दा-स्तुति या भावोच्छ्वास उनकी आलोचना में नहीं मिलेगा। आलोचना में उनके आदर्श आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। तिवारीजी की आलोचना में किसी विचारधारा से न परहेज है और ना ही किसी वैचारिक वाद के प्रति प्रतिबद्धता। इस अर्थ में उनकी दृष्टि साहित्यिक और सकारात्मक मूल्यवादी है। उन्होंने सभी विचारधाराओं के रचनाकारों पर गम्भीरता से विचार किया है। वे राग-द्वेष से मुक्त होकर अपने स्वतंत्र निर्णय देते हैं तथा किसी विषय का विवेचन-विश्लेषण करते हुए उस पर न केवल अद्यतन सामग्री प्रस्तुत करते हैं बल्कि उसमें कुछ अपना चिंतन भी जोड़ते हैं। यही उनकी आलोचना की प्रामाणिकता और सन्तुलित दृष्टि है। इस अर्थ में आलोचना उनके लिए बुद्धि की मुक्तावस्था मानी जा सकती है।

—विश्वनाथप्रसाद तिवारी
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व चित्र

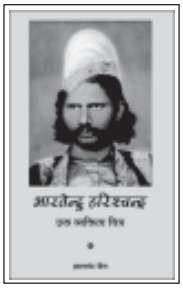

ज्ञानचंद जैन

मूल्य : 190.00
ISBN : 81-7124-361-4

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को समझने के लिए इस पुस्तक में प्रचुर मात्रा में ऐसे सूत्र मौजूद हैं जिनको गम्भीरता से आत्मसात् करके शोध-छात्र आगे काम कर सकते हैं और भारतेन्दु की रचनाओं के स्वस्थ, सबल,

अग्रदर्शी तत्त्वों को नये सिरे से उजागर कर सकते हैं। भारतेन्दु के जीवन का शायद ही कोई ऐसा पहलू हो जिसका उल्लेख इस पुस्तक में नहीं किया गया।

भारतेन्दु का जीवन-काल यद्यपि पूरे पैंतीस वर्ष का भी नहीं था, किन्तु कृतित्व की दृष्टि से वह एक पूरा युग समेटे हुए थे। सृजनात्मक ऊर्जा का अद्‌भुत विस्फोट था यह। उनके घर पर महफिल जमती थी, लेकिन पर्दे की ओट में बैठे वह लिखते रहते थे। बनारस में घर से बाहर जाते तो एक आदमी थैले में लेखन सामग्री लिये साथ चलता; और, जैसे ही तरंग उठी वह कहीं भी कलम-दावात लेकर लिखने बैठ जाते थे। रात में पलंग के निकट लेखन सामग्री उपलब्ध न होती तो ठीकरे या कोयले से दीवार पर ही लिख देते थे।

पुस्तक में भारतेन्दु, उनके पिता और पितामह के चित्रों सहित अन्य परिवारजनों तथा उनके जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों व स्थानों के 16 चित्र हैं। विविध स्रोतों से एकत्र किये गये इन दुर्लभ चित्रों तथा परिशिष्ट स्वरूप दी गयी सामग्री ने पुस्तक की उपयोगिता एवं संग्रहणीयता को बढ़ा दिया है। परिशिष्ट 1 में दी गयी 'भारतेन्दु जीवन-सारिणी' उनके जन्म-वर्ष से लेकर उनके निधन-वर्ष तक की घटनाएँ वर्ष-प्रति-वर्ष के क्रम से एक ही स्थान पर प्रस्तुत कर देती है। इसी प्रकार, भारतेन्दु के निधन के बाद 1885 में व्यास रामशंकर शर्म्मा लिखित 'चन्द्रास्त', जो परिशिष्ट 4 में दिया गया है, महत्त्वपूर्ण है।

पुस्तक की समूची अन्तर्वस्तु अनूठी है।

—रामशरण शर्मा 'मुंशी'

'सचेतक' से साभार

जीवनी एवं संस्मरण साहित्य : प्रमुख ग्रन्थ

संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मचरित, जीवनी, व्यक्तित्व के चारित्रिक वैशिष्ट्य को प्रस्तुत करते हैं। इनमें संवेदनशील निजता होती है। साहित्य, अध्यात्मक तथा विविध क्षेत्रों के व्यक्तियों के संस्मरण और जीवनचरित अत्यन्त प्रेरक और मार्गदर्शक होते हैं।

लाई हयात आए

लक्ष्मीधर मालवीय

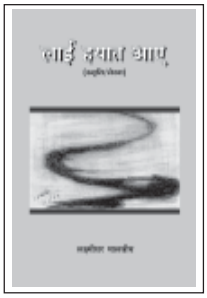

मूल्य : 280.00

ISBN : 81-7124-369-X

पं० मदनमोहन मालवीय के तृतीय आत्मज मुकुन्द मालवीय के पुत्र लक्ष्मीधर मालवीय इलाहाबाद तथा राजस्थान विश्वविद्यालय में प्राध्यापक; सन् 1966 से सन् 1990, 25 वर्ष ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर के संवेदनशील संस्मरण।

लाई हयात आए कल पढ़कर समाप्त की। कितने ही उलाहने हैं। 'बहन की बेटी' ही क्यों, अरे, बहन के हज़्बेंड, माँ की बड़ी बहन, वाइफ़ के कज़िन वगैरह हिन्दी पर कीड़ों की तरह बिलबिला रहे हैं, बोलचाल में और प्रकाशित होकर। जो हिन्दी हमारे रिश्तों को खाती जा रही है, वह पूरी तरह काल का कौर बन जाय तभी अच्छा है, और शुभस्य शीघ्रम्!

हिन्दी तो मर गई अनुदान के आवर्त में, लोकार्पण के लाक्षागृह में, पुरस्कार के वैतरणी में, सम्मानों और स्मारकों के बियावान में, प्रकाशक के गोदाम से सरकारी गोदाम के क़ैद में!

पश्चिम बंग में छोटे-बड़े प्रकाशक ग्रन्थावली की अँधेरी गली में नहीं खो गए। बाँग्लादेश में भी प्रकाशक, सभी, अधुनातम लेखकों को छाप रहे हैं। किताबें खूब बिकती हैं। पाठक अल्पवित्त हो तो क्या, अधिसंख्या है, अत: प्रकाशक और पाठक एक सूत्र में बँधे हैं। भाग्यवान् हैं, बांग्ला, मराठी आदि जो अनुदान, पुरस्कार, सम्मान, लोकार्पण की महामारी का शिकार होने से बच गई। जर्मनी की जनसंख्या कितनी है या नेदरलैंड्स की? बर्लिन से कई खण्डों में मार्क्सवादी विश्वकोश छप रहा है। ख़रीददार लाखों-करोड़ों में तो होंगे नहीं! लेइडेन से अँग्रेज़ी में भारतीय इतिहास, भाषा से संपृक्त ग्रन्थ छपते हैं। कितने लेंगे इन्हें? अत: अपने यहाँ से मानसिकता की कंगाली मिटाना पहले जरूरी है।

कुछ अवधी प्रयोग रससिचन कर गए, 'रोट' (पृ० 210)! और अवधी की रचनापटुता, 'पनिहाकपार' (पृ० 124)! अंग्रेज़ी के lachrymose का एकशब्दी इतना सुन्दर पर्यायवाची! आपकी सृष्टि हो तो प्रजापतये नम:। आपको यदि बिरसे में मिला तो भी मैं इसे पहली बार देखकर प्रसन्न ही नहीं, उपकृत भी हूँ। खड़ी बोली में प्रतिशब्द नहीं है इसका। और 'सरकवाँछत' (पृ० 27)। 'हाथ छोड़ बैठा' (पृ० 58) खड़ी बोली का छद्म आवरण ओढ़कर भी विशुद्ध अवधी का अनूठा उदाहरण है।

यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि कई पुश्तें शिवराखन पाठशाला (सी ए वी हाई स्कूल) की छात्र रह चुकी हैं—उनमें महामना भी थे। द्वितीय विश्वयुद्ध में सी ए वी में अँग्रेज़ों ने अपनी सेना बैठा दी थी। स्कूल एल्फ्रेड पार्क में बने खपरैल में स्थानान्तरित हुआ। '42 में पहला छात्र प्रदर्शन वहीं हुआ। सिटी मैजिस्ट्रेट था डिक्सन। सीधा सरल व्यक्ति। हल्का लाठीचार्ज विद्यार्थियों को बिखेरने में सफल रहा। स्कूल के पास ही में मेरा पुश्तैनी घर है, घर के दूसरी ओर पुरुषोत्तम पार्क। कभी उसमें हज़ारों श्रोताओं में भाषण देते थे, सुभाष, जवाहरलाल, अब्दुर रब निश्तर। अब वह खुला संडास है—1994 में मैंने देखा!

कहाँ मिलेंगे अब हैदर रिज़वी जैसे इलाहाबादी जो मरुदेश में कला के फूल खिलाने को तत्पर थे! कहाँ बेनी कहार और संत सिंह जैसे भृत्य! अपने मालिकों पर शासन करनेवाले चरित्रों से भेंट कराकर मुझे उनका दास बना लिया!

'हयात' ने मुझे बनारस का बुलानाला, भदैनी, मोतीझील, विश्वविद्यालय के पुन: दर्शन कराए! विश्वविद्यालय के अँग्रेज़ी विभाग में एक रीडर थे, मुकुंद मोरेश्वर देसाई। रिटायर हुए थे, कुछ ही दिनों से। आकृति से बड़े रुक्ष। किंवदंती थी कि उनसे शायद ही कोई छात्र मिलने जाता हो। एम०ए० से सद्य: उत्तीर्ण एक छात्र उनके यहाँ संस्तुतिपत्र लेने गया। उन्होंने शिष्टतापूर्वक उसका स्वागत किया, हाथ से पत्रक लिखा, छात्र को दिया। छात्र ने पढ़ा तो वह गलदश्रु, सोच न पाया कि वह अपने बारे में इतना कुछ लिखा पढ़ रहा है! देसाई साहब ने बातें शुरू कीं, ''तुम तो कभी आए ही नहीं, कुछ पूछने, किताब लेने!'' वह दरिद्र छात्र उन्हें कैसे बताता कि कर्णघंटा तथा नेपाली खपरा से विश्वविद्यालय जाने के लिए इक्के-रिक्शे का किराया भी उसके पास न होता, दिनभर लाइब्रेरी में पढ़ने के बाद एक कप चाय का पैसा भी नहीं। उसकी क्या हिम्मत पड़ती प्रोफ़ेसर के घर जाकर मिलने की!

पुस्तक के पीछे शब्द या नाम की अनुक्रमणिका क्यों न दी? हिन्दी में यह प्रथा न जाने कब चलेगी?

लेखक के लिए जितनी भी प्रशंसा उड़ेल दूँ, कम पड़ेगी। विश्वविद्यालय प्रकाशन ने यह स्तुत्य प्रकाशन सुष्ठुरूपेण किया, बधाई।

12 मार्च 04 **—इंदुकांत शुक्ल***

कैलिफ़ोर्निया

*श्री इंदुकांत शुक्ल काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के स्नातक हैं। लम्बे समय वह बनारस रहे, पता हुआ करता था मिश्रपोखरा। शुक्लजी की कुंभिलोपाख्यान शीर्षक आलोचना पुस्तक श्री मालवीय ने सन् '79 में जापान में पढ़कर उन्हें पत्र लिखा पर उत्तर न मिला। शुक्लजी का नया पता, इम्फाल का पाकर वहाँ भी पत्र भेजा मगर कोई जवाब नहीं! फिर नाम दिखा, स्वीडन से प्रकाशित होनेवाली एक पत्रिका में, पता पश्चिम जर्मनी का! अंततोगत्वा सम्पर्क जुड़ा शुक्लजी से, कैलिफ़ोर्निया के वर्तमान पते पर, सन् 95 में! और तभी यह ज्ञात हुआ कि इंदुकांतजी सी ए वी हाईस्कूल में उनके सतीर्थ ही नहीं, वहीं के संस्कृत अध्यापक पं० रामकृष्ण शुक्ल के सुपुत्र भी हैं।

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य
एक पठनीय कृति

युगेश्वर

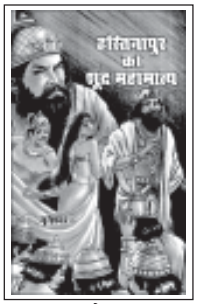

मूल्य : 140.00

ISBN : 81-7124-266-9

युगेश्वरजी ने उपन्यास लेखन क्षेत्र में अब अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली है और 'हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य' नामक उनके नये उपन्यास से उस पहचान पर पक्की मुहर लग जाती है। वे उक्त पहचान को व्यापक और गम्भीर भारतीय दृष्टि, स्पष्ट चिन्तन, सहज कथाशिल्प और प्राचीन प्रश्नों की संश्लिष्ट बुनावट के साथ प्रस्तुत करते हैं। कहानी उन्होंने महाभारत से ली है और उसमें कुछ कहने के लिए हेर-फेर नहीं किया है परन्तु उसे प्रस्तुत करने के शिल्प में ही उस कुशलता का प्रयोग किया है जिससे आज की राष्ट्रीय समस्याओं के

परिप्रेक्ष्य में कुछ विचारोत्तेजक बिन्दुओं पर ध्यान आकर्षित होता है।

सर्वप्रथम तो कृति के नाम पर ही ध्यान जाता है और 'शूद्र' शब्द पर केन्द्रित हो जाता है। आज इस शब्द को लेकर भारतीय संस्कृति और समाज-व्यवस्था पर कितनी-कितनी चोट की जाती है। विपरीत इसके महाभारत जैसे पंचम वेद में इस एक शूद्र को सर्वोच्च श्रद्धास्पद पद स्वयमेव मिला हुआ है।

सो, ऐसा लगता है कि कथाकार ने सोद्देश्य इसी निर्विवाद और निष्कलंक धर्ममूर्ति शूद्र के महिमा मण्डित कोण से महाभारत की कथा को रचाव दिया है। इस प्रकार यह नीतिशास्त्र का अद्वितीय प्रवक्ता महामात्य अनेक सामाजिक प्रश्नों का स्वयमेव उत्तर हो गया है। सत्य, धर्म और न्याय के सन्दर्भ में कहीं-कहीं स्वयं भगवान कृष्ण से और महाराज युधिष्ठिर से विदुर का पलड़ा भारी पड़ता दृष्टिगोचर होता है। वह सत्ता के आगे कहीं झुकता नहीं है। असत्य को दो टूक शब्दों में असत्य कहने का उसमें साहस है। अन्याय को देख 'धर्म' के नाम पर वह कहीं चुप नहीं रह जाता है।

कथाकार उसका चित्रण करते हुए कहता है, ''विदुर की प्रसिद्धि वीरता की नहीं है किन्तु वे वीर हैं, नीति मार्ग पर स्थिर रखने की वीरता वाले।'' (पृष्ठ 16) अपनी इसी वीरता के बल पर वे राजा धृतराष्ट्र को सलाह दे सकते हैं कि ''स्थायी शान्ति के लिए आवश्यक है कि पाण्डवों को आधा राज्य दे दिया जाय। वे हस्तिनापुर राज्य के आधे के भागी हैं।'' (पृष्ठ 18) मगर ऐसा सम्भव नहीं होता है और कृति के भीतर से सारांश के रूप में विनाश का गणित इस रूप में झलक जाता है कि मोह, लोभ और द्वेष जहाँ एकत्र हैं वहाँ विनाश अवश्यम्भावी है।

विदुर के व्यक्तित्व के साथ एक 'महात्मा' शब्द जुड़ जाता है। कथाकार ने उसके पूरे निखार के साथ उनके महामात्य जैसे जटिल राजनीतिक पद और तदनुसार कर्त्तव्यनिष्ठा का चित्रण किया है। महाभारत जैसे विशाल ग्रन्थ के कथा जाल के भीतर से अपने उद्देश्य के अनुकूल सन्दर्भों का चयन और संयोजन साधारण काम नहीं है। कथाकार ने बिना उलझाव के यह कार्य किया है और एक साफ-सुथरी, पठनीय कृति हिन्दी संसार को दी है। स्थान-स्थान पर महात्मा विदुर और महामात्य विदुर के संयोग से बने उपदेश-सूत्र जो संयोजित हैं वे बहुत प्रभावित करते हैं। जैसे—प्रेम मन का विस्तार करता है और द्वेष मन का संकोच है (पृष्ठ 10) ''षडयन्त्र का परिणाम कभी अच्छा नहीं होता।'' (पृष्ठ 50) ''निरर्थक बोलने वाले, पागल, बकवाद करने वाले बच्चों से भी उचित बातें ग्रहण करना चाहिए।'' (पृष्ठ 72) इन व्यक्त उपदेशों से अधिक कथा-प्रवाह में चरित्रों के माध्यम से व्यंजित उपदेश नि:सन्देह आज के मूल्य ह्रास वाले भारतीय जीवन में बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे।

कथाकार के द्वारा कृति की प्रस्तावना में कुछ शब्द बहुत मार्मिक ढंग से रखे गये हैं—''विदुर दासी-पुत्र हैं। शूद्र हैं। फिर भी हस्तिनापुर के शासक हैं। अपरिहार्य शासक। प्रधानमन्त्री। उनमें शूद्र होने की कोई हीनता नहीं है। महामात्य का गर्व नहीं है। शाक खाने-खिलाने की लज्जा भी नहीं है।''

कहने की आवश्यकता नहीं कि उक्त शब्द आज के राजनीतिकर्मी शासकों के परिप्रेक्ष्य में बहुत सार्थक, सटीक और सांकेतिक हैं। ऐसे प्रेरक चरित्र को प्रसन्न शिल्प में प्रस्तुत कर कथाकार ने हिन्दी उपन्यास के उस विशाल पाठक वर्ग के माँग की पूर्ति की है जो भारतीय जीवन मूल्यों को कथा-साहित्य में प्रतिष्ठित होते देखना चाहता है तथा जिसे 'आधुनिक' कहे जाने वाले कथा-साहित्य से सन्तुष्टि नहीं होती है।

—विवेकीराय

बड़ी बाग, गाजीपुर

बौद्ध तथा जैन धर्म

डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह

मूल्य : 180.00

ISBN : 81-7124-047-2

बौद्ध तथा जैन धर्म श्रमण संस्कृति की धाराएँ हैं। जो एक साथ संयुक्त रूप से देश में प्रवाहित हुईं। तथागत बुद्ध और तीर्थंकर महावीर समकालीन थे। दोनों का प्रचार स्थल प्राय: पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार रहा। दोनों मानवतावादी थे। बौद्धधर्म का प्रभाव समस्त दक्षिण पूर्व एशिया पर पड़ा। बौद्धधर्म का लोकप्रिय ग्रन्थ 'धम्मपद' तथा जैनधर्म का प्रमुख ग्रन्थ 'उत्तराध्ययन' है। दोनों धर्मों में यद्यपि समानताएँ होते हुए भी अनेक विविधताएँ हैं। इस शोध-ग्रन्थ में दोनों धर्मों के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के आधार पर विस्तृत तथा समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। बौद्ध तथा जैन धर्म के उपर्युक्त प्रमुख ग्रन्थों को दृष्टिगत रखते हुए शरण-गमन, अर्हत् तत्त्व, कर्म एवं निर्वाण, आचार-मीमांसा, मनोवैज्ञानिक धारणाएँ, यथाचिन्त, अप्रमाद, कषाय तथा तृष्णा। सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, आशा है बौद्ध तथा जैन धर्म के जिज्ञासु पाठक प्रस्तुत ग्रन्थ से लाभान्वित होंगे।

मत कहो दास हूँ

डॉ० दामोदर पाण्डेय

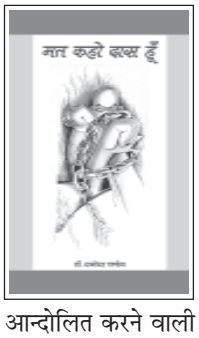

मूल्य : 100.00

ISBN : 81-7124-371-1

मत कहो दास हूँ प्रतिभा सम्पन्न कवि डॉ० दामोदर पाण्डेय की ताजा कविताओं का संग्रह है। इतनी सुन्दर आन्दोलित करने वाली कविताएँ—माँ को, नारी को, उसकी संवेदना और त्याग को, उसकी जिजीविषा को कवि ने कई-कई कोणों से देखा है, उसके प्रति विनत हुए हैं, उसका आभार माना है।

इन कविताओं में आक्रोश भी व्यक्त हुआ है, धर्म और संस्कृति के ठेकेदारों के प्रति, ढर्रे या लीक पर चलती आ रही उन परम्पराओं के प्रति जो समय की आवश्यकता का विवेक नहीं रखतीं।

मत कहो दास हूँ यथास्थिति को स्वीकार कर हार मान कर बैठने के विरोध में खड़ा होने का संदेश देता है। जो जहाँ है, जैसे है से आगे बढ़ने, ऊँचा उठने का संकल्प लेना हर मनुष्य का कर्त्तव्य है।

आज स्वयं को आधुनिक समझने वाले लोग अपने विवेक का प्रयोग करें और आधुनिकता का सही अर्थ तलाशने की कोशिश करें यह संकेत देती हैं ये कविताएँ।

बिन पानी सब सून

डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय

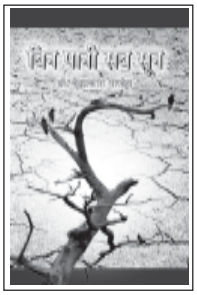

मूल्य : 90.00

ISBN : 81-7124-381-9

'बिन पानी सब सून' लेखक के आत्मपरक मनोरम निबन्धों का संकलन है। इन लघु रचनाओं में उतना ही कहने का प्रयास किया गया है जितना लेखक के अनुभव का सच है। निबन्ध की बुनियादी विशेषता—आत्मपरकता, आत्मीयता, अनायासता और व्यक्तित्व सम्पन्नता इन निबन्धों में सर्वत्र दिखाई देती है। अलग-अलग शीर्षकों वाली इन विविध रंगी गद्य रचनाओं को लेखक की मूल्यवादी संतुलित दृष्टि एक सूत्र में बाँधती है।

विश्वास है कि विचारप्रवाह के साथ-साथ चिन्तन की गहराई और व्यावहारिक अनुभव से समृद्ध ये निबन्ध लोक-प्रेरक सिद्ध होंगे।

भारत के ओलम्पियन पहलवान

गोवर्द्धनदास मेहरोत्रा

मूल्य : 300.00

ISBN : 81-7124-375-4

कुश्ती भारत के प्राचीनतम खेलों में से एक है। अखाड़ा तथा कुश्ती प्रतियोगिता हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग रहे हैं। भारत के हर उत्सव पर कुश्ती का आयोजन अनिवार्य था लेकिन धीरे-धीरे इस खेल की छवि धूमिल हो गई। गत कुछ वर्षों से खेल में पुन: जान आई है। भारतीय कुश्ती संघ ने इसकी खोई प्रतिष्ठा पुन: बहाल करने के लिए अथक प्रयास किए। इसमें कामयाबी भी मिली। गत कुछ वर्षों में भारतीय पहलवानों ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की तथा इस वर्ष एथेन्ज में होने वाले ओलम्पिक में सात पहलवानों ने अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित की है। इससे पूर्व इतना बड़ा दल भारत से कभी भी नहीं गया। मल्ल युद्ध की भूमि से पहलवानों के विषय में लिखी पुस्तक से युवा पहलवान प्रेरणा ले सकेंगे तथा इस खेल को पुन: जागृत कर अपनी सांस्कृतिक धरोहर को पुन: प्रतिष्ठा दिला सकेंगे।

— डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक

अध्यक्ष, भारतीय कुश्ती संघ,
इन्दिरा गाँधी स्टेडियम, नई दिल्ली
महानिदेशक पुलिस, हरियाणा, चण्डीगढ़

तुम्हारा परसाई

डॉ० कान्तिकुमार जैन

मूल्य : 300.00

प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2

संस्मरण-लेखन की नयी विधा के जनक कान्तिकुमार हरिशंकर परसाई के अभिन्न रहे हैं। उस अभिन्न की जीवनी को सजीव करने में कान्तिकुमार ने मध्यप्रदेश के समाज, शिक्षा, साहित्य से जुड़े भिन्न-भिन्न व्यक्तियों, प्रसंगों, परिवेशों का सजीव चित्रण किया है। व्यक्ति के जीवन में अन्धकार भी है और प्रकाश भी। परसाई का जीवन अँधेरी गलियों से गुजरता हुआ गिरता पड़ता प्रकाश की ओर बढ़ता रहा। परसाई व्यंग्यकार थे, उनका जीवन स्वयं में ही एक व्यंग्य था। परसाई की दुर्दान्त जिजीविषा और संघर्षों का यह ऐसा आख्यान है जिसे कान्तिकुमार ही लिख सकते हैं—बेबाक—न लाग न लपेट। इसमें यथार्थ और कल्पना का मणिकांचन योग है। इस जीवनी का कुछ भाग परसाई के जीवनकाल में ही लिखा जा चुका था जिसे परसाई ने स्वयं देखा था। 'तुम्हारा परसाई' में एक गहरा मानवीय सरोकार है जो परसाई के जीवन, व्यक्तित्व और व्यंग्यशीलता को दीप्ति प्रदान करता है।

परसाई कान्तिकुमार के लिए 'तुम्हारा परसाई' थे। इस जीवनी के लेखक ने भी पूरी निष्ठा से 'तुम्हारा कान्तिकुमार' का निर्वाह किया है। 'तुम्हारा परसाई' के सम्बोधन में जो संवेदनशीलता और अपनत्व है वह इस पुस्तक में भी है। लगता है परसाई की जीवनी लिखकर लेखक ने परसाई के प्रति अपना ऋण चुकाया है।

यह पुस्तक किसी साहित्यकार की जीवनी लेखन का मानक प्रस्तुत करती है। इसमें जीवनी, कहानी, उपन्यास, इतिहास सब कुछ है। बुंदेली शब्द और उनकी व्याख्या जीवनी को रसमय बनाते हैं। 'तुम्हारा परसाई' में जीवनी लेखन और अध्ययन की नई दिशा मिलती है। काश! कान्तिकुमार मध्यप्रदेश के दूसरे जिजीविषा साहित्यकार मुक्तिबोध की जीवनी इसी प्रकार लिखते।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

समझणिये की मर

(हरियाणवी उपन्यास)

डॉ० श्याम सखा 'श्याम'

प्रकाशक : प्रयास ट्रस्ट

12, विकास नगर, रोहतक-124 001

मूल्य : 95.00

उपन्यास की हरियाणवी भाषा-शैली इस उपन्यास की मूल संजीवनी शक्ति है। पूरा उपन्यास अनेक हरियाणवी मुहावरों, सूक्तियों, लोकोक्तियों और रागनियों के अंशों के प्रयोग से जीवन्त हो उठा है। लेखक ने हरियाणवी उच्चारण और सुर (टोन) को बड़े कौशल के साथ सुरक्षित रखा है। लोक-भाषा की भंगिमाओं से उपन्यास में हरियाणवी लोक-संस्कृति की सुगन्धित का सहज संचार हो गया है। लोकभाषा अपनी विविध अदाएँ और छटाएँ दिखाने में सफल रही है।

घणी गई थोड़ी रही

(लोककथा-संग्रह)

डॉ० श्याम सखा 'श्याम'

प्रकाशक : प्रयास ट्रस्ट

12, विकास नगर, रोहतक-124 001

मूल्य : 100.00

लोककथा लोक साहित्य की एक सशक्त विधा है, जिसमें लोकमानस के विविध आयाम बड़े रोचक एवं प्रभावात्मक ढंग से प्रतिबिम्बित होते हैं। अतीत को जानने की जिज्ञासा, घटनाओं के सूत्र, कोमल एवं कठोर भावनाएँ, सामाजिक एवं ऐतिहासिक परम्पराएँ, रीति-नीति एवं जीवन-दर्शन सब कुछ लोककथाओं के आगोश में समाहित रहता है।

'घड़ी गई थोड़ी रही' में लोककथाओं की निर्दिष्ट विशेषताएँ मणिकांचन रूप में अनुस्यूत हैं। इस पुस्तक में 42 लोककथाओं को समाविष्ट किया गया है। इसमें देश-प्रदेश की ही नहीं अपितु विदेश तक की लोककथाओं की बानगी देखी जा सकती है।

इस पुस्तक में संयोजित सभी लोककथाएँ जीवन की जटिल गुथियों को सुलझाने में कारगरि सिद्ध होंगी।

इन सभी कथाओं में कला-तन्तुओं को बड़े लोकरंजक एवं प्रेरणात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अनुचिंतन एवं अनुसंधान

(साहित्यिक वैचारिक निबन्ध)

डॉ० उदयप्रताप सिंह

मूल्य : 200.00

डॉ० सिंह को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के ज्ञापक सर्जकों के प्रति अद्‌भुत आकर्षण है। जहाँ कहीं भी ऐसे सर्जकों में गुणों को देखते हैं—वे अभिव्यक्त होने से अपने को रोक नहीं पाते। महीयसी महादेवी, महाप्राण निराला, भारतेन्दु, कृष्णभक्त पोद्दार, आपाजी प्रभृति अनेक सन्त, जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य तथा अनेक

हिन्दू-मुस्लिम संतों और भक्तों का स्मरण उनके स्वभाव में है।

रामविलास शर्मा के पदार्थवादी या मार्क्सवादी होने में सन्देह नहीं है परन्तु अन्य मार्क्सवादियों की तरह वे अपने राष्ट्र की उपेक्षा करके अन्तर्राष्ट्रीय होने का दम्भ नहीं पालते। पदार्थवादी होते हुए भी उन्हें अपने राष्ट्र और राष्ट्रीय घटकों के प्रति गहरी निष्ठा और बेहद लगाव है। प्रसादजी की तरह डॉ० शर्मा भी मानते हैं कि हम कहीं बाहर से नहीं आए।

निश्चय ही इस सारस्वत प्रयास से जिज्ञासु पाठक लाभान्वित होंगे। इस प्रस्तुति पर उन्हें हार्दिक साधुवाद।

—राममूर्ति त्रिपाठी, उज्जैन

भारतीय साहित्य परिषद, राजस्थान इकाई ने कोटा में कवि श्री दयाकृष्ण विजय वर्गीय की अध्यक्षता में 11 अप्रैल 2004 को डॉ० उदयप्रताप सिंह को इस कृति के लिए पुरस्कृत तथा सम्मानित किया।

अमृतपर्व

सम्पादक

वेदप्रकाश गर्ग और कृष्णचन्द्र गुप्त

प्रकाशक

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव अमृतपर्व समिति,

पी०एन० सिन्हा कॉलोनी, भिखना पहाड़ी, पटना-6

पृष्ठ : 246 मूल्य : 200.00

सारस्वत पुरुष डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव की लोक-यात्रा के पचहत्तरवें वर्ष पर प्रकाशित 'अमृतपर्व' उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के मूल्यांकनस्वरूप अभिनन्दन-ग्रन्थ है। उस अक्षर पुरुष की सारस्वत-यात्रा पर डॉ० राममूर्त्ति त्रिपाठी, डॉ० जगदीश गुप्त, डॉ० शिवनाथ, डॉ० श्रीधर वासुदेव सोहोकी, महाकवि आरसीप्रसाद सिंह जैसे साहित्य के कई शिखरपुरुषों ने आचार्य सूरिदेव की अनुकरणीय साधना पर साहित्यिक शालीनता का निकष पुरुष, एकनिष्ठ विद्या-व्यसनी और युगबोध के हस्ताक्षर के सजीव चित्र प्रस्तुत किये हैं। सूरिदेवजी ने 'वसुदेवहिण्डी' (सौरसेनी प्राकृत) प्राचीन ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद और उस पर शोध-प्रबन्ध लिखकर जैन-दर्शन के क्षेत्र में जो प्रतिष्ठा अर्जित की है, वह अपने आप में अभिवन्दनीय है। 'वसुदेवहिण्डी' भारतीय जीवन और संस्कृति की वृहत्कथा है और अब तक उसका अनुवाद सम्भव न हो सका था। इसी प्रकार 'मेघदूत : एक अनुचिन्तन', प्राकृत-संस्कृत का समानातर अध्ययन जैसे एक दर्जन ग्रन्थों के लेखक सूरिदेवजी की प्रतिभा का प्रसाद हिन्दी-जगत को प्राप्त हुआ है। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद की त्रैमासिक शोध-पत्रिका का पचीस वर्षों तक सम्पादन कर उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में क्रोशशिला स्थापित की है। विद्या-क्षेत्र में उल्लेखनीय स्थान बनाने के लिए वे आचार्य शिवपूजन सहाय और नलिनविलोचन शर्मा को गुरुतुल्य श्रद्धा देते हैं। अनेक सम्मानों और अलंकरणों से विभूषित श्रीरंजनजी की इस संग्रहणीय पुस्तक से अध्ययनशील पाठकों को मार्गदर्शन मिलेगा।

—पानासि

पुस्तक प्राप्ति

संगतिन यात्रा

(सात जिन्दगियों में लिपटा नारी-विमर्श)

ऋचा सिंह भटनागर

प्रकाशक : संगतिन, 30/10-क, माल रोड

शिवपुरी कालोनी, सीतापुर

मूल्य : 100.00 रुपये

उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में काम करने वाली सात औरतों के जीवन-संघर्ष की गाथा है। सभी कितना सहती हैं, त्याग करती हैं फिर भी टूटती नहीं यही उसकी शक्ति है। इस शक्ति की सकारात्मक पहचान की जरूरत है। 'संगतिन यात्रा' इस संदर्भ में सोचने को बाध्य करता है।

डॉ० रामचन्द्र तिवारी की नई पुस्तक

हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना सन्दर्भ

प्रस्तुत कृति हमारे समय-समय पर लिखे गए ऐसे निबन्धों का संग्रह है जो हिन्दी-गद्य की जातीय प्रकृति को, किसी न किसी रूप में, रेखांकित करने की दृष्टि से लिखे गए थे। इनमें कई ऐसे हैं, जो अभी तक अप्रकाशित थे और कुछ ऐसे हैं जो कृति की आन्तरिक व्यवस्था और सार्थकता की माँग को पूरा करने के लिए अभी-अभी लिखे गए हैं। इस कृति में पाठकों को 'भारतेन्दु' से लेकर नये कवियों और कथा-लेखिकाओं के गद्य के रंगरूप और प्रकृति का आभास मिल जायगा। हिन्दी-गद्य की जातीय प्रकृति के निर्माण में 'भारतेन्दु' के योगदान को प्राय: सभी आलोचकों ने स्वीकार किया है। उनकी भाषा-नीति उदार थी। 1877 ई० में हिन्दी की उन्नति पर अपने पद्यात्मक व्याख्यान में उन्होंने कहा था—

अंगरेजी अरु फारसी अरबी संस्कृत ढेर।
खुले खजाने तिनहिं क्यों लूटत लाबहु देर॥
सबको सार निकाल कै पुस्तक रचहु बनाइ।
छोटी-बड़ी अनेक विध विविध विषय की लाइ॥

जाहिर है कि उनको किसी भी भाषा के अध्ययन से परहेज नहीं था। वे चाहते यह थे कि सभी उन्नत भाषाओं में संचित ज्ञान का सार-तत्त्व लाकर हिन्दी को समृद्ध किया जाय। उर्दू का विरोध उन्होंने अवश्य किया है, किन्तु यह विरोध उनके समय के अन्य लेखकों ने भी किया है; उन लेखकों ने भी, जो बहुत अच्छी उर्दू जानते थे। स्वयं 'भारतेन्दु' को उर्दू का अच्छा ज्ञान था और वे 'रसा' नाम से शायरी भी करते थे; फिर भी उन्होंने 'उर्दू' का 'स्यापा' लिखा। हो सकता है कि इसका एक कारण 'राजा शिवप्रसाद' से उनका व्यक्तिगत विरोध भी रहा हो, किन्तु यह प्रमुख कारण नहीं था। वस्तुत: 'उर्दू' शहरों में रहने वाले मुसलमान रईसों, उनके मुसाहिबों, कचहरियों से जुड़े हुए हाकिमों, वकीलों, मुख्तारों और मुंशियों की भाषा थी। न तो उसका सम्बन्ध देश के अन्य प्रान्तों में रहने वाले मुसलमानों से था न गाँवों में रहने वाली अस्सी प्रतिशत जनता से। उसे अपना लेने पर अपने पारम्परिक साहित्य की समृद्ध विरासत से कट जाने का खतरा भी था। फारसी लिपि में लिखी जाने के कारण भी वह सामान्य जन को अपरिचित लगती थी। 'भारतेन्दु' के लेखन-काल के पहले से कलकत्ते से प्रकाशित होने वाले समाचार-पत्रों की भाषा की प्रकृति भी उसी हिन्दी से मिलती-जुलती थी जिसे अपनाकर 'भारतेन्दु' आगे बढ़ रहे थे। 'भारतेन्दु' के बाद महावीरप्रसाद द्विवेदी ने उसे परिष्कृत और बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने चुस्त-दुरुस्त करके मुहावरेदार बना दिया। गुप्तजी उर्दू से 'हिन्दी' में आए थे। उनके आने से हिन्दी-गद्य का वह रूप ढला जिसे हम हिन्दी का 'जातीय गद्य' कह सकते हैं। उनके बाद 'प्रेमचंद' का 'उर्दू' से हिन्दी में आना हिन्दी के लिए वरदान बन गया। 'प्रेमचंद' ने हिन्दी-गद्य की जातीय प्रकृति को विस्तार, वैविध्य और निखार के साथ ही सामाजिक जीवन के यथार्थ से जोड़कर ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य किया। यह आकस्मिक नहीं है कि प्रस्तुत संग्रह के एक तिहाई निबन्ध 'प्रेमचंद' और उनके साहित्य से जुड़े हैं। 'प्रेमचंद' के गद्य ने सुन्दरता की कसौटी बदल दी। उन्होंने गाँवों, झोपड़ों और खण्डहरों में रहने वाले गरीबों के जीवन-संधर्ष में सौन्दर्य देखा। उन्होंने मुरझाये ओठों और कुम्हलाए गालों वाले श्रमिकों की छोटी-छोटी आकांक्षाओं और सुख-दु:खमय दर्द भरे करुण जीवन में भी सौन्दर्य देखने का प्रस्ताव किया और कहा कि हमें बाहरी चमक-दमक से ऊपर उठकर हृदय के सौन्दर्य पर ध्यान देना चाहिए। 'प्रेमचंद' के बाद का हिन्दी-गद्य रचनाकारों की मानसिक सत्ता के विस्तार, समृद्धि, उत्कर्ष और रचनाधर्मिता के बदलते आयामों के साथ बहुवर्णी होता गया है। अब वह जीवन के जटिलतम यथार्थ को व्यक्त करने में पूर्णत: समर्थ है। उसकी सांस्कृतिक समृद्धि आश्वस्त करने वाली है और हमें विश्वास है कि अब वह वैश्विक चेतना की विस्तृत परिधि के भीतर अपनी निजी पहचान कायम कर लेगा। प्रस्तुत संग्रह के निबन्धों में पाठकों को उसकी इस समृद्धि का आभास मिलेगा। इस कृति में संगृहीत निबन्धों का उद्देश्य मात्र यह स्पष्ट करना है कि हिन्दी-गद्य की मूल प्रकृति न तो संकीर्ण है, न साम्प्रदायिक। उसे हम संघर्षशील हिन्दी-भाषी जनता की सम्पूर्ण मानसिकता के गतिशील प्रतिबिम्ब के रूप में देख सकते हैं।

—डॉ० रामचन्द्र तिवारी

विषय-सूची

1. हिन्दी-गद्य : प्रकृति और रचना सन्दर्भ, 2. हिन्दी-गद्य की जातीय प्रकृति, 3. हिन्दी नव-जागरण के केन्द्र बिन्दु 'भारतेन्दु', 4. भारतेन्दु की भाषा-चेतना, 5. आधुनिक हिन्दी-गद्य पर गाँधी का प्रभाव, 6. प्रेमचंद का गद्य : स्वरूप और प्रकृति, 7. मैथिलीशरण गुप्त का आलोचनात्मक गद्य, 8. हिन्दी भाषा और साहित्य को राहुलजी की देन, 9. राहुल सांकृत्यायन : एक विकासमान व्यक्तित्व, 10. सियारामशरण गुप्त का गद्य, 11. महादेवी का गद्य, 12. शमशेर का गद्य, 13. उपन्यास का ढाँचा : 'जादुई यथार्थवाद' से बढ़कर 'यथार्थ का जादू', 14. प्रेमचंद और भारतीय समाज, 15. प्रेमचंद और भारतीय उपन्यास, 16. पंच परमेश्वर : भावात्मक मूल्यों की चरितार्थता, 17. बूढ़ी काकी : भूख के विरुद्ध रचनात्मक युद्ध, 18. ईदगाह : बालमन का उजास, 19. कफ़न : भूख का मनोविज्ञान, 20. प्रेमचंद का सौन्दर्य-बोध, 21. यशपाल के बौद्ध धर्म प्रभावित उपन्यासों में जीवन-मूल्य, 22. हिन्दी-गद्य की विद्रोह-मुद्रा : शेखर : एक जीवनी, 23. हिन्दी-उपन्यास : आंचलिकता बनाम लोक-चेतना, 24. संस्कृति के व्याख्याता : नागरजी, 25. आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य में नारी चेतना, 26. नये कवियों का आलोचनात्मक गद्य।

नीब करौरी बाबा के अलौकिक प्रसंग

बच्चन सिंह

पृष्ठ : डिमाई 560
मूल्य : पेपरबैक : 300.00
सजिल्द : 400.00
ISBN : 81-7124-385-1

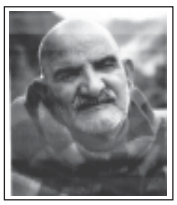

नीब करौरी बाबा अवतारी पुरुष थे। उनका विराट स्वरूप, उनके अलौकिक लीला प्रसंगों में अभिव्यक्त होता था। कलियुग के वे महान विभूति थे। उनके सान्निध्य के क्षण लोगों को आह्लादित करते हैं।

उत्तरांचल के कुमाऊँ तथा गढ़वाल मण्डलों में अनेक स्थानों पर—हनुमानगढ़ी, भूमियाधार, कैंची, पौड़ी, गेठिया, काठगोदाम, हल्दवानी, काकड़ीघाट, पिथौरागढ़ आदि में बाबा की प्रेरणा से अनेक हनुमान मन्दिर बने। बाबा के भक्तों ने सारे भारत में मन्दिर बनवाये। ऐसी विभूति के अलौकिक प्रसंग पाठकों को शान्ति प्रदान करेंगे।

स्मृति शेष के लेखक स्मृति शेष

डॉ० इन्द्रदेव सिंह श्री रामाश्रयदास महाविद्यालय, भुड़कुड़ा के पूर्व प्रधानाचार्य, 'भुड़कुड़ा की सन्त परम्परा' के लेखक 12 मई 2004 को अपनी पाण्डुलिपि 'स्मृति शेष' लेकर विश्वविद्यालय प्रकाशन में आये जिसमें उन्होंने दक्षिण भारत के चिकित्सालयों में किडनी रोग से ग्रस्त, डायलिसिस कराने, किडनी बदलवाने वाले रोगियों की व्यथा-कथा लिखी है। वे स्वयं किडनी रोग के मरीज थे और उन्होंने किडनी बदलवाई थी। 18 मई को सहसा उन्हें किडनी का कष्ट प्रारम्भ हुआ, परिवारजन उन्हें कार से गाजीपुर से लखनऊ संजय गाँधी अस्पताल ले जाने लगे, किन्तु जौनपुर पहुँचने के पूर्व ही शरीरान्त हो गया, और इस प्रकार 'स्मृति शेष' का रचयिता स्वयं स्मृति शेष हो गया। 1 फरवरी 1941 को महमूदपुर, गाजीपुर में जन्मे इन्द्रदेव सिंह बड़े निष्ठावान व्यक्ति थे। उनका इस प्रकार चला जाना अत्यन्त दु:खद है। उनकी रचना 'स्मृति शेष' शेष नहीं रहेगी, वह शीघ्र प्रकाशित होगी।

पुस्तक प्राप्ति

माधवी (लघु उपन्यास)
राधेश्याम चौबे
बृजेश प्रकाशन, हुकुलगंज, वाराणसी
मूल्य : 50.0

सपनों का सौदागर (कविता संग्रह)
प्रभात पाण्डेय
प्रति ध्वनि, 31 सर हरिनाम गोयनका स्ट्रीट
कोलकाता-7
मूल्य : 100.0

जीवन तेरे कितने रंग (कविता संग्रह)
डॉ० केवलकृष्ण पाठक
माण्डवी प्रकाशन, एफ/59, राजनगर
गाजियाबाद
मूल्य : 90.0

ब्रह्मज्ञान का यथार्थ
लेखक : दयानन्द वर्मा
प्रकाशक : माइंड एंड बॉडी रिसर्च सेंटर
नई दिल्ली-110 0048
मूल्य : 95.00 रुपये

नौ अध्यायों में विस्तृत इस पुस्तक में स्पष्ट किया गया है कि ब्रह्मज्ञान का विषय केवल आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं है अपितु आध्यात्मिक के साथ भौतिक ज्ञान भी समाविष्ट है।

प्राचीन मान्यताओं, कर्मकाण्डों, ज्योतिष आदि की यथार्थता पर गम्भीर विचार किया गया है।

धन धन मातु गङ्ग

डॉ० भानुशंकर मेहता

पृष्ठ : (डिमाई/8) 312 मूल्य : 300.00

अनेक चित्रों सहित

ISBN : 81-7124-376-2

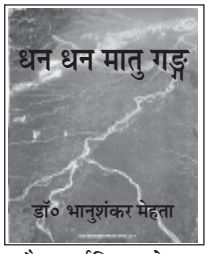

श्रीमद्भवद्गीता में भगवान ने कहा स्रोतामस्मि जाह्नवी। ऐसा कहकर श्रीकृष्ण ने गङ्गा को महिमामयी बना दिया। वेद, पुराण, महाकाव्य, संत, महात्मा, मनीषी, कवि और दार्शनिक, लेखक और चिंतक गङ्गा का गुणगान करते रहे हैं। गङ्गा के बारे में अपार सामग्री बिखरी पड़ी है जिसका नमूना इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

पश्चिमी दृष्टि से गङ्गा ब्रह्मपुत्र और सिन्धु से छोटी है। विश्व की नदियों में उसका २८वाँ स्थान है पर प्राचीन सभ्यताओं की कहानी पढ़ें तो ज्ञात होगा वे सब नदी घाटियों में ही उपजी मिस्र नील नदी की घाटी में, सुमेरबाबुल दजला फरात के तट पर, चीन पीत नदी पर और भारत सिन्धु घाटी से पोषित हुआ। पर सबसे ऊँचे पर्वत हिमालय के आँगन का इतिहास तो गंगा का ही इतिहास है। किसी ने ठीक कहा गङ्गा ही भारत है और भारत गङ्गा है। इस नदी के तट पर ३० करोड़ लोग रहते हैं अर्थात् दुनिया के बीस में से एक आदमी इसके तट पर रहता है और इस अर्थ में यह दुनिया की सबसे बड़ी नदी है। भारत ही नहीं पद्मा बनकर यह सघन आबादी वाले देश 'बांग्ला देश' की भी प्यास बुझाती है। वह पयपान कराती है इसलिये 'माँ' है। पालकर्त्ता विष्णु के अवतार कृष्ण ने ठीक ही तो कहा 'नदियों में मैं गङ्गा हूँ'। यह उसी महिमामय नदी की कहानी है और साथ ही उसमें एक वेदना भी प्रवाहित है जिसे पुस्तक की भूमिका लेखक, श्रीमती कमला पाण्डेय ने चीखकर कहा है 'रक्षत गङ्गाम'—गङ्गा की रक्षा करें।

कल जब 'गङ्गा' नहीं रहेगी तो हम आप कहाँ होंगे? इस ग्रन्थ में गङ्गा में अवगाहन कीजिये और संकल्प लीजिये कि अपनी रक्षा के लिये, अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये 'मैं गङ्गा की रक्षा करूँगा।' माँ गङ्गा आपका कल्याण करें।

सर्वधर्म समभाव को समर्पित डॉ० भानुशंकर मेहता के लिये संसार की सभी नदियाँ गंगा है और हमें सबका सम्मान करना चाहिये, क्योंकि वे पृथ्वी को अपनी माता और वसुधा को कुटुम्ब मानते हैं।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 5 **मई-जून 2004** **अंक : 5-6**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 40.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082